म.प्र. राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
सा विद्या या विमुक्तये

शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें
मध्य प्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल

TESS India

अंग्रेजी
हाई स्कूल/हायर सेकेण्डरी

पढ़ने की समझ

भारत में विद्यालय समर्थित
शिक्षक शिक्षा

www.TESS-India.edu.in

CC BY SA
http://creativecommons.org/licenses/

The Open University

UKaid
from the British people

एस .आर .मोहन्ती
अपर मुख्य सचिव

अ.शा.पत्र क्र R.S.K/10
दूरभाष कार्यालय - 0755-4251330
मध्यप्रदेश शासन
स्कूल शिक्षा विभाग
मंत्रालय, वल्लभ भवन, भोपाल-462 004
भोपाल, दिनांक 20-1-2016

संदेश

प्रिय शिक्षक साथियों,

बच्चों की शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण और रोचक बनाने के लिए स्कूल शिक्षा विभाग निरन्तर प्रयासरत् है। आप सभी के प्रयासों से शिक्षकों के शिक्षण कौशल में भी निखार आया है और शालाओं में कक्षा शिक्षण भी आंनददायी तथा बेहतर हुआ है।

इसी दिशा में शिक्षकों को बाल केन्द्रित शिक्षण की ओर उन्मुख करने और शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के उद्देश्यों को लेकर, TESS India द्वारा मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) का विकास किया गया हैं। इनका उपयोग शिक्षण कार्य में सहजता व सुगमतापूर्वक किया जा सकता है। आशा है कि ये संसाधन, शिक्षकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन और क्षमतावर्द्धन में लाभकारी और उपयोगी सिद्ध होंगे।

राज्य शिक्षा केन्द्र के संयुक्त तत्वाधान में TESS India द्वारा स्थानीय भाषा में तैयार किये गये मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) को www.educationportal.mp.gov.in पर भी उपलब्ध कराया गया हैं। आशा है इन संसाधनों के उपयोग से प्रदेश के शिक्षक और शिक्षक प्रशिक्षक लाभान्वित होंगे और कक्षाओं में पठन पाठन को रूचिकर और गुणवत्तायुक्त बनाने में मदद मिलेगी।
शुभकामनाओं सहित,

(एस.आर.मोहन्ती)

दीप्ति गौड मुकर्जी
आयुक्त
राज्य शिक्षा केन्द्र एवं
सचिव
मध्यप्रदेश शासन
स्कूल शिक्षा विभाग

अर्द्ध शा. पत्र क्र. : 8
दिनांक : 12/1/16
पुस्तक भवन, वी-विंग
अरेरा हिल्स, भोपाल-462011
फोन : (का.) 2768392
फैक्स : (0755) 2552363
वेवसाइट : www.educationportal.mp.gov.in
ई-मेल : rskcommmp@nic.in

संदेश

प्रिय शिक्षक साथियों,

सभी बच्चों को रूचिकर और बाल केन्द्रित शिक्षा उपलब्ध हो इसके लिए आवश्यक है कि हमारे शिक्षकों को शिक्षण की नवीनतम तकनीकों और शिक्षण विधियों से परिचित कराया जाए साथ ही इन तकनीकों के उपयोग के लिए उन्हे प्रोत्साहित भी किया जाए। TESS India द्वारा तैयार किये गये मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) के उपयोग से शिक्षक शिक्षण प्रविधि के व्यावहारिक उपयोग को सीख सकते हैं। इनकी सहायता से शिक्षक न केवल विषय वस्तु को सुगमता पूर्वक पढ़ा सकते हैं बल्कि पठन पाठन की इस प्रकिया में बच्चों की अधिक से अधिक सहभागिता भी सुनिश्चित कर सकते हैं।

राज्य शिक्षा केन्द्र स्कूल शिक्षा विभाग ने स्थानीय भाषा में तैयार किये गये इन मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) को अपने पोर्टल www.educationportal.mp.gov.in पर भी उपलब्ध कराया है।

आशा हैं, कि आप इन संसाधनों का कक्षा शिक्षण के दौरान नियमित रूप से उपयोग करेंगे और अपने शिक्षण कौशल में वृद्धि करते हुए बच्चों की पढ़ाई को आनंददायक बनाने का प्रयास करेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

(दीप्ति गौड़ मुकर्जी)

शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

टेस–इण्डिया स्थानीयकृत ओईआर निर्माण में सहयोग

मार्गदर्शन एवं समीक्षा :
श्रीमती स्वाति मीणा नायक, अपर मिशन संचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एच. के. सेनापति, प्राचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. ओ.पी.शर्मा, अपर संचालक, मध्यप्रदेश एससीईआरटी
डॉ. अशोक कुमार पारीक उपसंचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री आर. पी. त्रिपाठी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
प्रो.जयदीप मंडल, विभागाध्यक्ष विज्ञान एवं गणित शिक्षा संकाय, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. आर. रायजादा, सहप्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष विस्तार शिक्षा, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. वी.जी. जाधव, से.नि. प्राध्यापक भौतिक, एनसीईआरटी
डॉ. के. बी. सुब्रमण्यम से.नि. प्राध्यापक गणित, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. आई. पी. अग्रवाल से.नि. प्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. अश्विनी गर्ग सहा. प्राध्यापक गणित संकाय, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. एल. के. तिवारी, सहप्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
श्री एल.एस.चौहान, सहा. प्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. श्रुति त्रिपाठी, सहा. प्राध्यापक अंग्रेजी, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. रजनी थपलियाल, व्याख्याता अंग्रेजी, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. मधु जैन, व्याख्याता शास. उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल
डॉ. सुशोवन बनिक, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. सौरभ कुमार मिश्रा, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
श्री. अजी थॉमस, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. राजीव कुमार जैन, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
स्थानीयकरण :
भाषा एवं साक्षरता
डॉ. लोकेश खरे, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एम.एल. उपाध्याय से.नि. व्याख्याता शास. उत्कृष्ट उ.मा.विद्यालय मुरैना
श्री रामगोपाल रायकवार ,कनि. व्याख्याता, डाइट कुण्डेश्वर, टीकमगढ़
डॉ. दीपक जैन अध्यापक, शास. उत्कृष्ट उ.मा.विद्यालय क्र 1 टीकमगढ़
अंग्रेजी
श्री राजेन्द्र कुमार पाण्डेय, प्राचार्य, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्रीमती कमलेश शर्मा. डायरेक्टर , ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री हेमंत शर्मा, प्राचार्य, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री मनोज कुमार गुहा वरि. व्याख्याता, एससीईआरटी. मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एफ.एस.खान, वरि.व्याख्याता, प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान (आईएएसई) भोपाल
श्री सुदीप दास, प्राचार्य, शास.उ.मा.विद्यालय दालौदा, मन्दसौर
श्रीमती संगीता सक्सेना, व्याख्याता, ,शास.कस्तूरबा कन्या उ.मा.विद्यालय भोपाल
गणित
श्री बी.बी. पी. गुप्ता, समन्वयक गणित, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री ए. एच. खान प्राचार्य शास.उ.मा.विद्यालय रामाकोना, छिंदवाड़ा
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद गुप्त , प्राचार्य शास. जीवाजी ऑब्जर्वेटरी उज्जैन
डॉ.आर,सी. उपाध्याय, वरि. व्याख्याता, डाइट, सतना
डॉ. सीमा जैन, व्याख्याता, शास. कन्या उ.मा.विद्यालय गोविन्दपुरा, भोपाल
श्री सुशील कुमार शर्मा, शिक्षक, शास. लक्ष्मी मंडी उ.मा.विद्यालय, अशोका गार्डन, भोपाल
विज्ञान
डॉ. अशोक कुमार पारीक उपसंचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
डॉ. सुसम्मा जॉनसन, व्याख्याता एस.आई.एस.ई. जबलपुर मध्यप्रदेश
डॉ.सुबोध सक्सैना, समन्वयक एससीईआरटी मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
श्री आर. पी. त्रिपाठी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री अरूण भार्गव, वरि. व्याख्याता, एससीईआरटी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
श्रीमती सुषमा भट्ट, वरि.व्याख्याता, एससीईआरटी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री ब्रजेश सक्सेना, प्राचार्य, एससीईआरटी ,मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. रेहाना सिद्दकी से.नि. व्याख्याता सेन्ट फ्रांसिस हा. से. स्कूल भोपाल

*TESS-India (*विद्यालय समर्थित शिक्षक शिक्षा*)* का उद्देश्य मुक्त शैक्षिक संसाधनों की सहायता से भारत में प्रारंभिक और सेकेण्डरी शिक्षकों के कक्षा अभ्यास व कक्षा निष्पादन को सुधारना है जिसमें वे इन संसाधनों की सहायता से विद्यार्थी - केंद्रित, सहभागी दृष्टिकोणों का विकास कर सकें। टेस इंडिया के मुक्त शैक्षिक संसाधन शिक्षकों के लिए स्कूल पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त, सहयोगी पुस्तिका या संसाधन की तरह हैं। इसमें शिक्षकों के लिए कुछ गतिविधियां दी गई हैं जिन्हे वे कक्षाओ में विद्यार्थियों के साथ प्रयोग में ला सकते हैं, इसके साथ साथ कुछ केस स्टडी दी गई हैं जो यह बताती हैं कि कैसे अन्य शिक्षकों ने पाठ्य विषय को कक्षाओं में पढ़ाया और अपनी विषय संबंधी जानकारियों को बढ़ाने तथा पाठ योजनाओं को तैयार करने में संसाधनों का उपयोग किया।

TESS-India OER भारतीय पाठ्यक्रम और संदर्भों के अनुकूल भारतीय तथा अंतर्राष्ट्रीय लेखकों के सहयोग से तैयार किये गये है और ये ऑनलाइन तथा प्रिंट रूप में उपयोग के लिए उपलब्ध हैं *(http://www.tess-india.edu.in)*। *OER* कार्यक्रम से जुड़े प्रत्येक भारतीय राज्य के शिक्षकों के उपयोग के लिए उपयुक्त तथा कई संस्करणों में उपलब्ध हैं तथा शिक्षक व उपयोगकर्ता इन्हे अपनी स्थानीय आवश्यकताओं और सन्दर्भों के अनुरूप इनका स्थानीयकरण करके उपयोग कर सकते हैं।

प्रस्तुत संस्करण मध्यप्रदेश की स्थानीय आवश्यकताओं और संदर्भों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है।

वीडियों संसाधन

इस इकाई में कुछ गतिविधियों के साथ यह आइकॉन दिया गया है*:* *.* इसका अर्थ है कि आप उक्त विशिष्ट विषयवस्तु या शैक्षणिक प्रविधि को और अधिक समझने के लिए *TESS-India* के वीडियो संसाधनों की मदद ले सकते हैं।

TESS-India वीडियो ससांधन (Resources) भारतीय परिप्रेक्ष्य में कक्षाओं में उपयोग की जा सकने वाली सीखने–सिखाने की विविध तकनीकों को दर्शाते हैं। हमें यकीन है कि इनसे आपको इसी प्रकार की तकनीकें अपनी कक्षा में करने में मदद मिलेगी। यदि इन वीडियो संसाधनों तक आपकी पहुँच नहीं हो तो कोई बात नहीं। यह वीडियो पाठ्यपुस्तक का स्थान नहीं लेते, बल्कि उसको पढ़ाने में आपकी मदद करते हैं।

TESS-India के वीडियो संसाधनों को *TESS-India* की वेबसाइट *http://www.tess-india.edu.in/* पर ऑनलाइन देखा जा सकता है या डाउनलोड किया जा सकता है*)*। इसके अतिरिक्त आप इन वीडियो को सीडी या मेमोरी कार्ड में लेकर भी देख सकते हैं।

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन–शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है: http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/
TESS-India is led by The Open University UK and funded by UK aid from the UK government

यह इकाई किस बारे में है

हाई स्कूल के मेरे कई विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तक के अंग्रेजी अध्यायों को पढ़ते समय उन्हें समझने में कठिनाई होती है। पाठ अक्सर लंबे होते हैं, और उनमें ऐसे कई शब्द होते हैं जिन्हें विद्यार्थी नहीं जानते। मुझे आम तौर पर हर चीज का अनुवाद करना पड़ता है। क्या ऐसे और तरीके हैं जिनसे मैं अपने विद्यार्थियों की अंग्रेजी के अध्यायों को पढ़ने और समझने में सहायता कर सकती हूँ?

विद्यार्थी अंग्रेजी जैसी नई भाषा पढ़ते समय शब्दों और व्याकरण पर अक्सर ध्यान देने लगते है। इसके कारण वे जो कुछ पढ़ते है उसके समग्र अर्थ पर ध्यान नहीं रहता और वे लेखक के तर्क या कहानी की घटनाओं को समझ नहीं पाते

यह इकाई आपको अपने विद्यार्थियों को अंग्रेजी समझकर पढ़ने में मदद करेगी और इससे वे आगे चलकर अपने पाठ्यपुस्तक के lessons समझ सकेंगे। इसमें दी गई तकनीकों का प्रयोग करके आप विद्यार्थियों को अंग्रेजी समझकर पढ़ने में सक्षम बनाने में मदद कर सकते हैं।यह आपको दिखाती है कि कुछ ऐसी गतिविधियाँ कैसे की जायं जिन्हें विद्यार्थी पाठ को पढ़ने से पहले, पाठ के दौरान और बाद में कर सकते हैं, ताकि जो कुछ वे पढ़ रहे हैं उसके अर्थ पर ध्यान देने में उन्हें सहायता मिल सके। इकाई के अंत में, आप इन सभी तकनीकों का उपयोग करते हुए अध्याय पढ़ाने के लिए एक अध्याय योजना पाएंगे।

इस इकाई से आप क्या सीख सकते हैं

- विद्यार्थियों को अध्याय पढ़ने के लिए तैयार कैसे करें ताकि वे उसे बेहतर रूप से समझ सकें।
- विद्यार्थियों को पाठ पढ़ते समय समझने में किस प्रकार मदद करें।
- पढ़ने के बाद उनकी समझ की जाँच किस प्रकार करें।

1 विद्यार्थियों को पढ़ने के लिए तैयार करना

अक्सर अध्यापक नए पाठ को पढ़ाते समय जो तकनीक प्रयोग करते है वह है 'अनुवाद', क्योंकि इससे विद्यार्थियों को अलग–अलग शब्दों को समझने में मदद मिल सकती है। परन्तु, हर समय अनुवाद की तकनीक का उपयोग करने से कुछ हानियाँ होती हैं:

- यदि आप हमेशा अनुवाद करते है और फिर अर्थ समझाते है तो आपके विद्यार्थी उतनी अंग्रेजी नहीं सुन पाते हैं जितनी उन्हें सुननी चाहिए। आपके विद्यार्थी कक्षा में जितनी अधिक अंग्रेजी सुनेंगे, वे उसे उतना ही बेहतर समझ कर उसका उपयोग कर सकेंगे (देखें इकाई *अपनी कक्षा में अधिक अंग्रेजी का उपयोग करना*)।
- अधिकांश भाषाओं में कई शब्दों और वाक्यांशों का सीधा अनुवाद होना संभव नहीं होता। इसलिए यदि विद्यार्थी अंग्रेजी का उपयोग करके ही अंग्रेजी सीखते हैं, तो उनके अंग्रेजी में सोचने और भाषा को अधिक प्रभावी ढंग से अनुभव करने और उसका उपयोग करने की अधिक संभावना होती हैं।
- अनुवाद और स्पष्टीकरण पाठों के अर्थों को स्वयं मालूम करने में विद्यार्थियों की मदद नहीं करते हैं (देखें इकाई *शब्दावली के अध्यापन के लिए कार्यनीतियाँ*)। यदि उनके लिए हर शब्द का अनुवाद किया जाय, तो उन्हें कक्षा के बाहर या भविष्य में अंग्रेजी पढ़ने की जरूरत पड़ने पर कठिनाई हो सकती है।

विचार कीजिए

आपने अपने विद्यार्थियों को जो आखिरी अध्याय पढ़ाया था उसके बारे में सोचें और इन प्रश्नों का उत्तर दें।

- अध्याय में किस प्रकार की पठन–सामग्री थी? उदाहरण के लिए, क्या वह गद्य, कहानी या कविता थी?
- क्या आपने विद्यार्थियों को वह पठन–सामग्री ऊँची आवाज में पढ़कर सुनाई थी?
- आपके विद्यार्थियों ने पठन–सामग्री को कितनी अच्छी तरह से समझा?
- क्या आपने उसका अनुवाद विद्यार्थियों की स्थानीय भाषा में किया?
- क्या आपने उसका अर्थ विद्यार्थियों की स्थानीय भाषा में समझाया?

अनुवाद और अर्थ समझाने के साथ–साथ जो कुछ वे पढ़ते हैं उसे समझने में विद्यार्थियों की सहायता करने के लिए अन्य तकनीकों का उपयोग करना अच्छा है।

विद्यार्थियों को अपनी पाठ्यपुस्तकों में कई अध्याय पढ़ने हैं। इनमें से कई पठन–सामग्रियाँ कठिन हैं, और उनमें जटिल शब्दावली और व्याकरणात्मक संरचनाएं हैं। कभी–कभी पाठों के विषय या थीम भी कठिन होती हैं, जिनमें बहुत समय पहले हुई घटनाओं की चर्चा होती है या वे ऐसे स्थानों में होती हैं जहाँ विद्यार्थी न तो कभी गए हैं या जिनका उन्होंने नाम तक नहीं सुना है।

विद्यार्थी जो कुछ उन्हें पढ़ना है उसे और पाठ की भाषा को तब बेहतर समझ पाएंगे जब आप उन्हें पढ़ने के लिए तैयार करेंगे। आप ऐसा विद्यार्थियों के पढ़ना शुरू करने से पहले पाठ के कुछ शब्दों, वाक्यांशों और व्याकरणात्मक संरचनाओं को पढ़ाकर या पाठ को पढ़ने से पहले अध्याय के विषय या थीम की चर्चा करके कर सकते हैं।

गतिविधि 1: सत्रहवीं सदी की एक कविता, 'The Perfect Life' को पढ़ाने की योजना बनाना

यह प्लानिंग की गतिविधि आपके लिए है।

कक्षा 10 की पाठ्यपुस्तक से इस कविता को पढ़ें (*English: A Textbook for Class X*)। इसका नाम 'The Perfect Life' है और इसे Ben Jonson ने लिखा था।

It is not growing like a tree
In bulk doth make man better be;
Or standing long an oak, three hundred year,
To fall a log at last, dry, bald, and sere:
A lily of a day
Is fairer far in May,
Although it fall and die that night—
It was the plant and flower of light.
In small proportions we just beauties see;
And in short measures life may perfect be.

जब आप इसे पढ़ लें, तब इन प्रश्नों का उत्तर दें। हो सके तो अपने किसी साथी अध्यापक के साथ उन पर चर्चा करें:

- इस कविता की भाषा कक्षा 10 के विद्यार्थियों के लिए काफी कठिन है। इससे पहले कि विद्यार्थी कविता को पढ़ें आप उन्हें भाषा के लिए कैसे तैयार करेंगे?

- इस कविता को सत्रहवीं शताब्दी में एक अंग्रेज कवि ने लिखा था। आप इक्कीसवीं सदी के भारतीय विद्यार्थियों को कविता के लिए कैसे तैयार करेंगे?

नीचे कुछ शिक्षकों के विचार दिए गए हैं,जो उन्होने इस कविता को पढ़ाने के तरीके के बारे में व्यक्त किए हैं। इन्हें पढ़कर इनकी तुलना अपने स्वयं के विचारों से करें। आपने जो कोई विचार सोचें हैं उन्हें नीचे खाली स्थान में जोड़ें।

मैं कविता के शीर्षक को बोर्ड पर लिखूँगा, और विद्यार्थियों से अंदाजा लगाने को कहूँगा कि कविता में क्या है।

मैंने अपने विद्यार्थियों को यह कविता पढ़ाई। उनके द्वारा इसे पढ़ने से पहले, मैंने उनसे उन चीजों की एक सूची बनाने को कहा जिनसे जीवन परिपूर्ण बन सकता है। फिर हमने उनकी सूची पर चर्चा की और को बोर्ड पर लिखा।

मैंने कुछ सबसे कठिन शब्द बोर्ड पर लिखे, और विद्यार्थियों से पूछा कि क्या वे उनका अर्थ जानते हैं। मैंने उन्हें वे शब्द समझाए जिन्हें वे नहीं जानते थे ताकि कविता को पढ़ना अधिक आसान हो जाय।

मैं एक क्लास मे गया जहाँ यह कविता पढाई जा रही थी। वहाँ विद्यार्थियों के कविता को पढ़ने से पहले अध्यापक ने उन्हें एक बरगद के वृक्ष और कमल के फूल का चित्र दिखाया और उन्होंने उनके बीच की भिन्नताओं के बारे में बातचीत की।

आपके विचार

वे गतिविधियाँ जिनमें आप अपने विद्यार्थियों को कुछ पढ़ने से पहले तैयार करते हैं अक्सर पठन–पूर्व गतिविधियाँ कहलाती हैं। पाठ किस बारे में होगा इस विषय में सोचने में वे विद्यार्थियों की सहायता करती हैं, जिससे उन्हें पाठ को बेहतर ढंग से समझने में भी मदद मिलती है।

केस–स्टडी 1: श्रीमती गुप्ता अपनी कक्षा के साथ एक पठन–पूर्व गतिविधि करती हैं

श्रीमती गुप्ता कक्षा 10 को अंग्रेजी पढ़ाती हैं। उन्हें अपने विद्यार्थियों को Ben Jonson's कविता 'The Perfect Life' पढ़ानी थी। उन्हें पता था कि पाठ कठिन है, और उन्होंने सोचा कि यदि वे अपनी कक्षा को कविता पढ़ने से पहले तैयार करेंगी तो वे उसे बेहतर ढंग से समझेंगे और याद रखेंगे।

कविता पढ़ाने से पहले मैंने बोर्ड पर उसका शीर्षक लिखाः 'The Perfect Life'. मैंने अपने विद्यार्थियों से शीर्षक का हिंदी में अनुवाद करने को कहकर जाँच की कि वे इसका अर्थ समझ सकते हैं। फिर मैंने उनसे पूछाः ''What makes a perfect life?'

शुरू में किसी ने भी कोई सुझाव नहीं दिया, इसलिए मैंने उन्हें एक उदाहरण दियाः 'The perfect life for me would be to do no cooking!' विद्यार्थी हँसने लगे, और उनमें से एक या दो में सुझाव देने का आत्मविश्वास जागा। इससे अन्य विद्यार्थियों को भी विचार आए, और मैंने उनमें से पाँच या छह को बोर्ड पर लिखा।

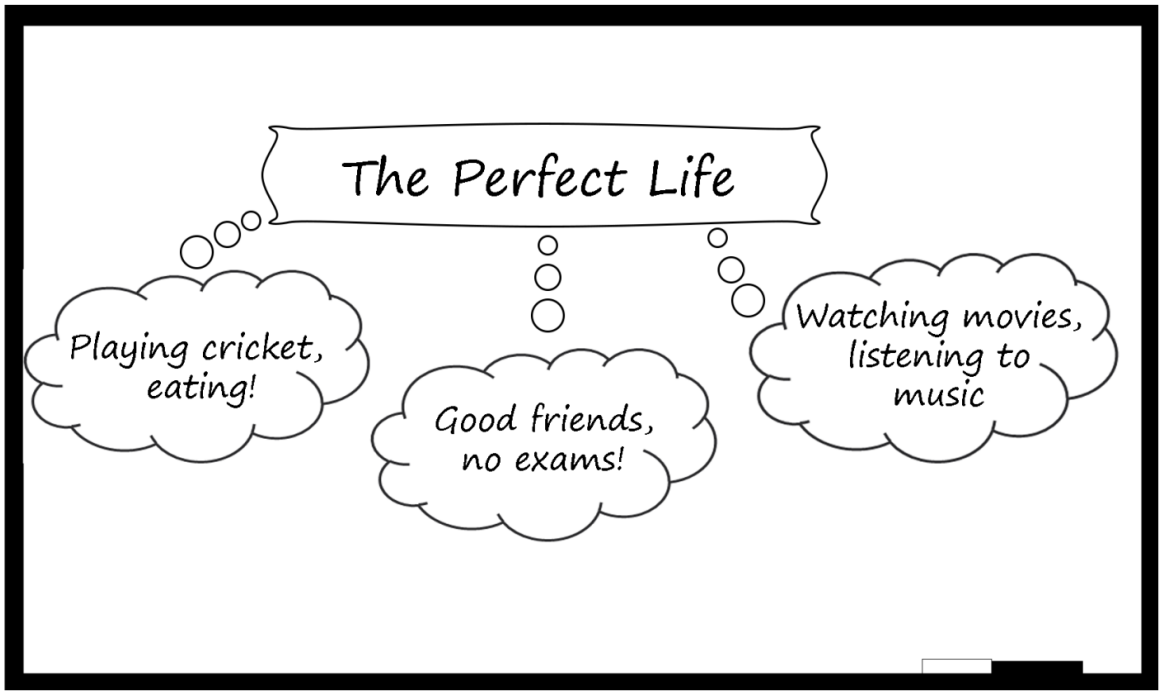

फिर मैंने उनकी जोड़ियों बनाई। मैंने ऐसा हर दूसरी बेंच पर बैठे विद्यार्थियों से पीछे घूमने को, और जो व्यक्ति अब उनके सामने था उसके साथ काम करने को कहकर किया। मैंने उनसे कहाः

> Write a list of the things that make a perfect life. Try to write in English if you can, as with the answers on the board. You have three minutes to write your lists.

जब मेरे विद्यार्थी लिख रहे थे, तब मैं कक्षा में घूमते हुए देखती रही कि वे गतिविधि कर रहे हैं और यदि किसी को शब्दावली के साथ मदद की जरूरत हुई तो उनकी मदद की गई।

कुछ मिनटों के बाद मैंने लिखना बंद करने को कहा और बोर्ड पर निम्नलिखित वाक्य लिखाः 'The perfect life is like a …'

मैंने बोर्ड पर लिखा वाक्य पढ़कर सुनाया, और विद्यार्थियों से किसी प्राकृतिक वस्तु का उपयोग करते हुए वाक्य को पूरा करने को कहा, और उन्हें एक उदाहरण दियाः 'The perfect life is like a hotel.' This is because you don't have to cook when you stay at a hotel!

फिर मैंने उनसे कहा कि वे न केवल शब्द सुझाएँ, बल्कि यह भी लिखे उस शव्द को क्यों चुना गया। अधिकांश विद्यार्थियों के लिए अंग्रेजी में कारण देना कठिन था, इसलिए मैंने जाँच की कि क्या अन्य विद्यार्थी सही शब्दों की खोज करने में उनकी मदद कर सकते हैं। यदि वे फिर भी अंग्रेजी में नहीं समझा सकते थे तो मैंने उनसे अपनी स्थानीय भाषा का उपयोग करने को कहा। मेरे लिए महत्वपूर्ण यह था कि विद्यार्थी विषय में दिलचस्पी लें और कविता को पढ़ने के लिए उत्सुक रहें।

इसके बाद मैंने अपनी कक्षा को बताया कि वे ''The Perfect Life' शीर्षक वाली एक कविता पढ़ने जा रहे हैं। मैंने उनसे कहा कि मैं कविता को ऊँची आवाज में पढ़कर सुनाने जा रही हूँ और यह कि उन्हें उसे सुनना और अपनी पाठ्यपुस्तकों में उसका अनुसरण करना चाहिए। मैंने समझाया कि कविता में, कवि जीवन की तुलना प्राकृतिक वस्तुओं से करता है। मैंने उनसे उनके कविता को पढ़ते और सुनते समय नोट करने को कहा कि वे प्राकृतिक वस्तुएं क्या थीं। मैंने ऐसा इसलिए किया ताकि उनके पास पाठ को पढ़ने के लिए कोई कारण रहे। मैंने फिर कविता को बिना अनुवाद किए या समझाए, ऊँची आवाज में पढ़ा।

फिर मैंने कक्षा से कुछ प्रश्न पूछेः

इस गतिविधि ने कविता को समझने में हर एक की मदद की। इसके बाद कविता पर चर्चा करना अधिक आसान था, और विद्यार्थियों ने कविता को बेहतर तरह से याद भी किया।

गतिविधि 2: कक्षा में आजमाएं – विद्यार्थियों को पढ़ने के लिए तैयार करना

इससे पहले कि विद्यार्थी कोई पाठ या अन्य अंग्रेजी पठन–सामग्री पढ़ें, उन्हें तैयार करना हमेशा उपयोगी होता है (आप विद्यार्थियों को किसी सुनने की गतिविधि के लिए भी इसी तरह से तैयार कर सकते हैं – देखें इकाई–^सुनना भी एक कला* है निम्नलिखित चरणों का अनुसरण करें:

1. ऐसा कोई पाठ चुनें जिसे आपके विद्यार्थियों ने अब तक नहीं पढ़ा है । यह किसी भी तरह के पाठ का अंश भी हो सकता है – गद्य, पद्य, नाटक या अखबार की खबर।

2. कक्षा में, अंश को पढ़ें। कोई पठन–पूर्व गतिविधि नोट करें जिसे आप अपने विद्यार्थियों से पाठ को पढ़ने से पहले करवाना चाहते हैं। यहाँ पठन–पूर्व गतिविधियों के कुछ उदाहरण दिए गए हैं:

- शीर्षक को बोर्ड पर लिखें और विद्यार्थियों से अंदाजा लगाने को कहें कि पाठ किस बारे में है
- उन्हें मुख्य विषय पर चर्चा करने को कहें (उदाहरण के लिए यदि विषय घरेलू कामकाज के बारे में है तो आप उनसे इस बात पर चर्चा करने को कह सकते हैं कि घर में कौन क्या करता है)
- पठन–सामग्री में से कुछ कठिन शब्द और वाक्यांश पढ़ाएं
- पाठ में से कुछ शब्दों और वाक्यांशों को बोर्ड पर लिखें और विद्यार्थियों से उनका प्रयोग वाक्यों में करने को कहें।

3. कक्षा में, यह गतिविधि अपने विद्यार्थियों के साथ करें। यदि विद्यार्थी अपनी स्थानीय भाषा का उपयोग करते हैं, तो वे महत्वपूर्ण शब्द और वाक्यांश खोजने में उनकी सहायता करें जिनकी उन्हें अंग्रेजी में जरूरत पड़ती है। इससे उन्हें पाठ या अंश को बेहतर ढंग से समझने में तब भी मदद मिलेगी।

विचार कीजिए

यहाँ इस गतिविधि को आजमाने के बाद आपके विचार करने के लिए कुछ प्रश्न दिए गए हैं। यदि संभव हो तो इन प्रश्नों की चर्चा किसी साथी शिक्षक के साथ करें।

- कक्षा में पठन–पूर्व गतिविधि करने में कितना समय लगा?
- क्या आपके विद्यार्थी गतिविधि में दिलचस्पी लेते दिखाई दिए? क्या कोई ऐसे विद्यार्थी थे जिन्हें दिलचस्पी नहीं थी? आप ऐसा क्यों सोचते हैं?
- क्या इस पठन–पूर्व गतिविधि ने पाठ को समझने में उनकी मदद की?

आपको लगेगां कि पठन–पूर्व गतिविधियाँ बहुत ज्यादा समय ले लेती हैं और अध्याय वैसे ही शुरू कर देना चाहिए। लेकिन इस तरह की गतिविधियों में अधिक समय लेना जरूरी नहीं है – पाँच या दस मिनट भी विद्यार्थियों को पढ़ने के लिए तैयार करने के लिए मददगार हो सकते हैं।

उम्मीद है कि ये गतिविधियाँ आपके विद्यार्थियों की दिलचस्पी को बढ़ाएंगी और अध्यायों को बेहतर ढंग से समझने में उनकी सहायता करेंगी। नोट करें कि कौन से विद्यार्थी समझते लग रहे हैं और कौन नहीं, ताकि आप उन लोगों की सहायता कर सकें जिन्हें समझने में अब भी कठिनाई हो रही है। विद्यार्थियों के पढ़ने से पहले विभिन्न गतिविधियों को आजमाएं और देखें कि कौन सी अधिक प्रभावी हैं।

2 पाठ को पढ़ते समय उसे समझने में विद्यार्थियों की मदद करना

विद्यार्थियों को पठन–पूर्व गतिविधि देने से जो कुछ वे पढ़ने जा रहे हैं उसके लिए तैयार होने में उन्हें मदद मिलती है। विद्यार्थियों को अपने आप मौन होकर पढ़ने के लिए समय दे (चित्र 1)। यह उन्हे पठन को समझने और उसका आनंद लेने में भी मदद कर सकता है। आगे में, आप वे गतिविधियाँ देखेंगे जो आप अपने विद्यार्थियों को मौन होकर पढ़ते समय दे सकते हैं ताकि वे समझ सकें कि वे क्या पढ़ रहे हैं।

चित्र 1 एक छात्रा मौन होकर पढ़ते हुए।

पढ़कर समझने के लिए विद्याथियों को पढते समय कुछ कार्य देना चाहिए। जैसे पढने से पहले उन्हें कुछ प्रश्न दे दें जिनका उत्तर वे पढ़ते समय तलाश करें। इससे उनका ध्यान पढ़कर समझने में केन्द्रित रहेगा।

इससे आपको इस बात का आकलन करने में भी मदद मिलेगी कि विद्यार्थियों ने कितना समझा है। विद्यार्थी अलग अलग रफ्तारों से पढ़ेंगे और अलग अलग बातें समझेंगे। जब आपके विद्यार्थी पढ़ रहे हों तब कमरे में घूमें। नोट करें कि किन विद्यार्थियों को प्रश्नों का उत्तर देने में समस्या हो रही है और किन विद्यार्थियों को गतिविधि आसान लग रही है।

वीडियोः मॉनीटरिंग और फीडबैक देना

गतिविधि 3ः कक्षा में आजमाएं – पाठ को पढ़ते समय उसे समझने में अपने विद्यार्थियों की मदद करने के लिए मौन पठन का उपयोग करना

अपनी कक्षा में मौन पठन निम्नानुसार करवा सकतें है–

1. ऐसा कोई पाठ चुनें जिसे आपके विद्यार्थियों ने अब तक नहीं पढ़ा है । वह किसी भी तरह का पाठ हो सकता है – गद्य, पद्य, नाटक या अखबार की खबर। यह वही पठन–सामग्री हो सकती है जिसका उपयोग आपने गतिविधि 1 में किया था।

2.कक्षा में पाठ को पढ़ें। ऐसे चार या पाँच प्रश्न सोचें जो आप इसके बारे में पूछ सकते हैं। यदि यह कोई लंबा पाठ है, तो इसके एक खंड के बारे में पूछे जा सकने वाले प्रश्न सोचें। सुनिश्चित करें कि प्रश्न पाठ के मतलब और उसमें जो कुछ होता है उसके बारे में हैं (उदाहरण के लिए, 'What advice does the writer give?'), उसमें प्रयुक्त भाषा के बारे में नहीं (उदाहरण के लिए, 'What does "doth" mean?')।पाठ ^एक पत्र* के उदाहरण और उसके मतलब के बारे में आपके द्वारा पूछे जा सकने वाले कुछ प्रश्नों के लिए संसाधन 1 देखें। प्रश्न पूछने के बारे में आपको इकाई *समग्र–कक्षा पठन दिनचर्याएं* में अधिक जानकारी मिलेगी।

3.विद्यार्थियों को पाठ के बारे में प्रश्न दें। आप इन प्रश्नों को बोर्ड पर लिख सकते हैं, या उन्हें लिखवा सकते हैं। ऐसा विद्यार्थियों के पाठ को पढ़ने से *पहले* करें।

4.विद्यार्थियों से अध्याय या पाठ को पढ़ने के कहें। यदि उसमें दो या तीन अनुच्छेद हैं, तो उनसे उसका केवल एक भाग पढ़ने को कहें। विद्यार्थियों से मौन होकर पढ़ने और प्रश्नों के उत्तर खोजने को कहें। उन्हें बताएं कि हर शब्द को समझना महत्वपूर्ण नहीं है। उन्हें एक समय सीमा दें। विद्यार्थियों के पढ़ते समय, कमरे में चहलकदमी करते हुए जाँच करें कि हर कोई पढ़ रहा है और किसी भी समस्या या प्रश्न का समाधान करें।

5.जब समय सीमा समाप्त हो जाए तब विद्यार्थियों से प्रश्नों का उत्तर देने को कहें। आप संपूर्ण कक्षा से जवाब मांग सकते हैं या वे अपने उत्तरों की जोड़ियों में काम कर सकते हैं। यदि उन्हें अपनी बात अंग्रेजी में कहने में कठिनाई हो रही हो तो वे अपनी स्थानीय भाषा का उपयोग कर सकते हैं। यदि उन्हें स्वयं को व्यक्त करने में कठिनाई हो रही हो – तो उनकी सहायता करने का प्रयास करें – या उनसे एक दूसरे की मदद करवाएं। स्वयं प्रश्नों का उत्तर देने में जल्दबाजी करें, धीरज रखें और विद्यार्थियों को उत्तर देने दें।

6.अपने विद्यार्थियों से पूछें कि उन्होंने पाठ से और क्या सीखा है या उसमें क्या दिलचस्प पाया है और उनसे उसके कारण बताने को कहें।

7.इस गतिविधि के बाद, या अगली कक्षा में, यदि आपको लगे कि विद्यार्थियों ने पाठ को ठीक से नहीं समझा है तो आप आगे बढ़ते हुए पाठ को और उसमें इस्तेमाल की गई भाषा को अधिक विस्तार से देख सकते हैं।

विचार कीजिए

यहाँ इस गतिविधि को आजमाने के बाद आपके विचार करने के लिए कुछ प्रश्न दिए गए हैं। यदि संभव हो, तो इन प्रश्नों की चर्चा किसी साथी शिक्षक के साथ करें।

- क्या विद्यार्थियों के मौन पठन गतिविधि करते समय उनको समय सीमा देने से उनके पठन को फोकस करने में सहायता मिली?
- आपके विचार से आपके द्वारा अनुवाद या अर्थ समझाए बगैर विद्यार्थियों को कितना समझ में आया?

समय सीमा महत्वपूर्ण होती हैं क्योंकि कुछ विद्यार्थी अन्य लोगों से अधिक तेजी से पढ़ेंगे, और कुछ अन्य लोगों से अधिक समझेंगे। जो भी हो आपके द्वारा तय की गई समय सीमा में सभी विद्यार्थी अध्याय का कम से कम कुछ भाग पढ़ने में समर्थ होंगे और उन्हें सामग्री का कुछ भाग तो समझ में आएगा। यदि कुछ विद्यार्थी अन्य लोगों से पहले समाप्त कर लेते हैं तो वे अध्याय या अध्याय के एक खंड को फिर से पढ़ सकते हैं।

जब वे मौन होकर पढ़ते हैं, तब आपके विद्यार्थी हर शब्द को नहीं समझेंगे। उन्हें ऐसा करने की जरूरत भी नहीं है। और जब वे पहली बार कोई चीज पढ़ते हैं तो यह बिल्कुल सामान्य बात है। महत्वपूर्ण यह है कि वे आवश्यक जानकारी या पाठ के संदेश को समझें। जो प्रश्न आप उनसे पूछते हैं उन्हें उस संदेश को खोजने में उनकी मदद करनी चाहिए। अभ्यास से विद्यार्थी अपने बलबूते पर बेहतर ढंग से पढ़ने लगेंगे।

अधिकांश लोगों के लिए मौन होकर पढ़ते समय पाठ का आनंद लेना और उसे समझना अधिक आसान होता है। फिर भी अंग्रेजी कक्षा में, विद्यार्थियों से अक्सर पाठों को ऊँची आवाज में पढ़ने को कहा जाता है – या शिक्षक स्वंय विद्यार्थियों को ऊँची आवाज में पाठ पढ़कर सुनाते हैं। ऊँची आवाज में पढ़ना एक उपयोगी तकनीक हो सकती है। परन्तु ऐसा हर समय करने से विद्यार्थियों में स्वतंत्र रूप से पढ़ना सीखने का कौशल पनपता नहीं है।

3 पाठ को पढ़ने के बाद उसकी समझ की जाँच करना

विद्यार्थियों के पाठ को पढ़ लेने के बाद उन्हें जो कुछ सबसे महत्वपूर्ण बातें हुई हैं या लेखक जो सबसे महत्वपूर्ण बातें कह रहा है उसकी संभवतः कुछ समझ बनी होगी। उन्हें शब्दावली और भाषा की भी थोड़ी–बहुत समझ होगी। पाठ के पढ़ने के बाद आपको जाँचना चाहिए कि विद्यार्थियों ने कितना समझा है।

जिन गतिविधियों का उपयोग आप विद्यार्थियों की समझ की जाँच करने के लिए कर सकते हैं, उनमें निम्नलिखित शामिल हैं:

- **बोध–प्रश्नः** आप इन्हें पाठ्यपुस्तक में पा सकते हैं, या आप स्वयं अपने बना सकते हैं। उन्हें बोर्ड पर लिखें या उन्हें अपने विद्यार्थियों को लिखवाएं। एक विकल्प है अध्याय को पढ़ने के बाद विद्यार्थियों से समूहों में स्वयं अपने बोध–प्रश्न लिखने को कहना। समूह में विद्यार्थी प्रश्नों का आदान–प्रदान करते हैं और एक दूसरे के प्रश्नों का उत्तर देते हैं (देखें इकाई *समग्र–कक्षा पठन दिनचर्याएं*)।
- **चर्चाएं और सारांशः** विद्यार्थी जो कुछ उन्होंने पाठ के बारे में समझा है समूह में उस पर चर्चा करते हैं। वे जो कुछ हुआ उसका सारांश, या पाठ की सबसे महत्वपूर्ण बातें लिख सकते हैं।
- **व्याकरण और शब्दावली विकासः** पाठ्यपुस्तकों के अध्यायों में शब्दावली और व्याकरणात्मक संरचनाओं के उदाहरण होते हैं जिन्हें विद्यार्थी सीख और उपयोग में ला सकते हैं (देखें इकाई *व्यावहारिक अंग्रेजी व्याकरण*)। अध्याय को पढ़ने के बाद, ऐसी गतिविधियाँ करें जिनमें विद्यार्थी कुछ शब्दों या संरचनाओं का उपयोग कर सकें । उदाहरण के लिए, उन्हें अध्याय में दी गई किसी नई शब्दावली का उपयोग करते हुए कुछ वाक्य या अनुच्छेद लिखने को कहें।

पठन–पश्च गतिविधियाँ वे गतिविधियॉ हैं जिनमें आप जाँच करते हैं कि विद्यार्थियों ने पाठ के बारे में कितना समझा हैया उन्हें पाठ के किसी अंश की भाषा का उपयोग करने को प्रोत्साहित करती हैं। वे आप और आपके विद्यार्थियों की यह देखने में मदद करती हैं कि उन्होंने कितना समझा है। इस प्रकार वे नई भाषा सीखने में विद्यार्थियों की मदद करती हैं।

गतिविधि 4: पठन–पश्च गतिविधि का नियोजन और निष्पादन करना
अगले सप्ताह जो पाठ पढ़ाने वाले है उसके बारे में सोचे। पठन–पश्च गतिविधियों के लिए विचारों को देखें और तय करें कि आप अपनी कक्षा के लिए किन का उपयोग करेंगे। अध्यायों के नियोजन के बारे में अधिक जानकारी के लिए, देखें संसाधन 2।

पठन–पश्च गतिविधि का उपयोग करते हुए अध्याय का नियोजन और निष्पादन करें। जब विद्यार्थी पठन–पश्च गतिविधियाँ कर रहे हों तब कमरे में घूमकर जाँचें कि उन्होंने क्या समझा है और इसका उपयोग पठन में विद्यार्थियों की प्रगति के अपने आकलन के भाग के रूप में करें।

क्या इस गतिविधि ने विद्यार्थियों की समझ का आकलन करने में आपकी सहायता की? इन आकलनों का उपयोग आप अपने अगले अध्याय का नियोजन करने के लिए कैसे करेंगे? आकलन पर अधिक जानकारी के लिए, संसाधन 3 देखें।

वीडियोः पाठ की योजना बनाना

वीडियोः प्रगति एवं प्रदर्शन का आकलन करना

4 तकनीकों का संयोजन करना

अब केस स्टडी 2 पढ़ें।

केस–स्टडी 2: श्रीमती गुप्ता 'भारत के नाम नेहरू के पत्र* पर एक मंथन सत्र संचालित कर रही हैं

श्रीमती गुप्ता ने इस इकाई की तकनीकों का उपयोग कक्षा 9 को एक अंश पढ़ाने के लिए किया। उन्होंने कक्षा को पठन–पूर्व गतिविधि के लिए तैयार किया और फिर विद्यार्थियों के पठन को पूरा कर लेने के बाद अंश के विषय से संबंधित भाषा का अभ्यास करने के लिए कुछ गतिविधियाँ कीं।

पिछले सप्ताह मैं कक्षा 9 में नेहरू जी का 'A letter to the children of India' with Class IX पढ़ा रही थी [संसाधन 1 देखें]। मेरे विद्यार्थियों द्वारा पाठ को पढ़ने से पहले मैंने बोर्ड पर शीर्षक लिखा, और समझाया कि पत्र किस बारे में है। मैंने उन्हें बताया कि यह पत्र एक बुजर्ग द्वारा लिखा गया था जो युवा पीढ़ी को कुछ सलाह दे रहे थे।

मैंने अपने विद्यार्थियों से कहा सोचो वे भारत के बच्चों को क्या सलाह देंगे। एक–दो विद्यार्थियों ने कुछ सुझाव दिए जैसे 'You should visit Delhi!' और 'You should learn about technology!' तब मैंने उनसे जोड़ियों में काम करने और उन पाँच सलाहों को लिखने को कहा। मैंने उनसे वाक्यों को अंग्रेजी में लिखने को कहा। मुझे उन गलतियों की चिंता नहीं थी जो विद्यार्थियों के लिखते समय हो रही थीं। मैं तो बस उनसे कुछ विचार चाहती थी। तीन मिनट बाद मैंने गतिविधि को समाप्त कर दिया और तीन या चार जोड़ियों से उन्होंने जो कुछ लिखा था वह पढ़कर सुनाने को कहा।

फिर मैंने कक्षा से नेहरूजी के पत्र को मौन रहकर पढ़ने को कहा। मैंने उनसे पढ़ते समय उस सलाह को रेखांकित करने को कहा जो उन्होंने अपने पत्र में दी थी। मैंने उन्हें पढ़ने और सलाह को खोजने के लिए दस मिनट की समय सीमा दी। जब वे पढ़ रहे थे, मैंने कमरे में घूमकर सुनिश्चित किया कि हर एक ने समझ लिया है कि उन्हें क्या करना है। मैंने देखा कि अजरा पत्र में कुछ भी रेखांकित नहीं कर रही थी। उसको समझ में नहीं आया था क्या तलाश करना है, इसलिए मैंने उसे समझाया और खोजने में उसकी मदद की। तब वह अपने आप यह काम करने लगी।

जब समय खत्म हो गया, तब मैंने अपने विद्यार्थियों से कहा कि वे अपने बगल मैं बैठे सहपाठी से ढूढीं हुई सलाह की तुलना करें। मैंने उनसे यह भी चर्चा करने को कहा कि वह ढूढ़ी हुई सलाह के कितने समान या उससे कितनी भिन्न थी जो उन्होंने पत्र को पढ़ने से पहले लिखी थी। जब वे अपने विचारों की तुलना कर रहे थे, तब मैं कमरे में घूमती रही और वार्तालापों को सुना। यह स्पष्ट था कि कुछ विद्यार्थियों ने पत्र में दी गई सलाह समझ ली थी, जबकि कुछ विद्यार्थियों को कठिनाई हो रही थी। कुछ मिनटों बाद मैंने कक्षा से बातचीत

करना बंद करने को कहा। फिर हमने पत्र में दी गई सलाह पर एक समग्र कक्षा के रूप में चर्चा की और मैंने ऐसे शब्दों को स्पष्ट किया जो दी गई सलाह को समझने से विद्यार्थियों को रोक रहे थे।

इसके बाद मैंने बोर्ड पर ऐसे कुछ वाक्यांश लिखे जिनका उपयोग हम अंग्रेजी में सलाह देते समय कर सकते हैं:

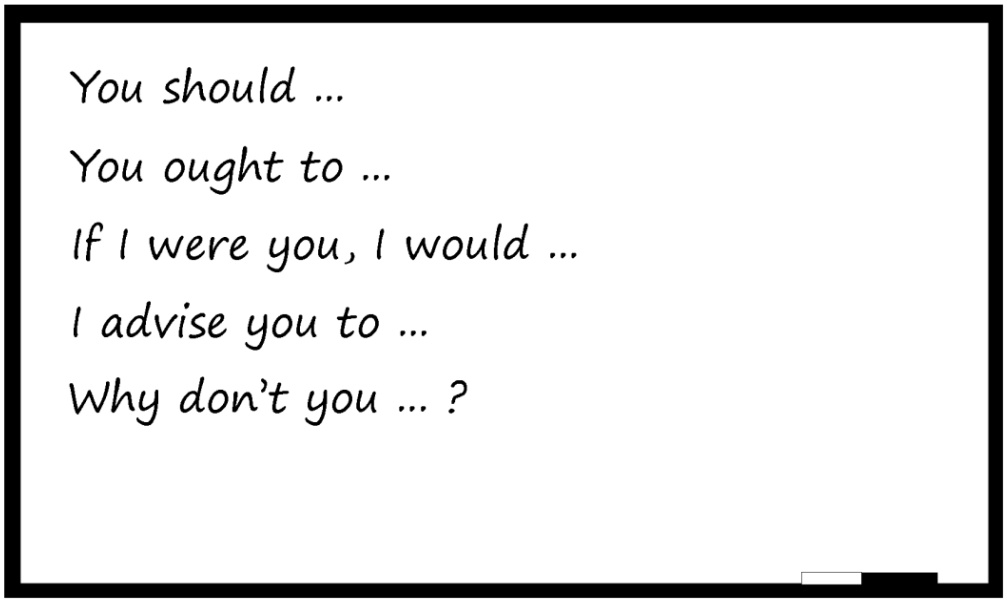

मैंने अपने विद्यार्थियों से यह कल्पना करने को कहा कि वे नेहरूजी की तरह बुजुर्ग दादा और दादी हैं, और अपने पोते–पोतियों के साथ बात कर रहे हैं। उनमें से कुछ को यह काफी मज़ेदार लगा और उन्हें यह विचार पसंद आया! मैंने उनसे ऐसी कुछ सलाह सोचने को कहा जो वे अपने पोते–पोतियों को दे सकते हैं। मैंने उन्हें एक उदाहरण दिया: 'You should work hard.' कुछ विद्यार्थियों ने कुछ और विचार दिए और मैंने उन्हें बोर्ड पर इस प्रकार लिख दिया:

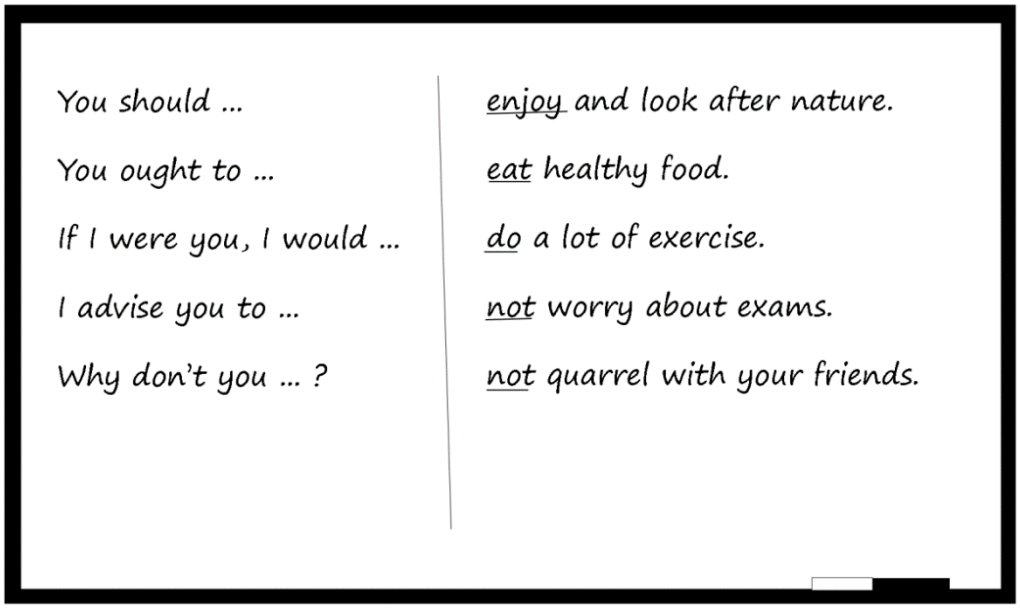

मैंने स्पष्ट किया कि विद्यार्थी किसी भी शुरूआत (बोर्ड के बायीं तरफ) को किसी भी समाप्ति (बोर्ड के दाहिने तरफ) के साथ उपयोग में ला सकते हैं। मैंने क्रियाओं ('enjoy', 'eat', 'do', 'be', 'avoid') को रेखांकित किया और समझाया कि उन्हें इन वाक्यांशों के बाद verbs के infinitive form उपयोग करना चाहिए। फिर मैंने वाक्यों को ऊँची आवाज में पढ़ा और विद्यार्थियों से उन्हें दोहराने को कहा ताकि वे अपने उच्चारण का अभ्यास कर सकें।

उसके बाद मैंने विद्यार्थियों को जोड़ियों में संगठित किया और उनसे कहा कि उनमें से एक दादा/दादी है, और दूसरा पोता/पोती। मैंने समझाया कि दादा/दादी द्वारा पोते/पोती को सलाह दी जानी चाहिए। जब वे तैयार हो गए तो मैंने उन्हें रोल प्ले के लिए दो या तीन मिनट दिए और फिर उन्होंने अपनी भूमिकाएं आपस में बदल लीं। जब मैं सुन रही थी तब मैंने देखा कि कुछ जोड़ियाँ बोर्ड पर लिखी सलाह का उपयोग कर रही थीं जबकि जिनका आत्मविश्वास अधिक था नए वाक्यांश बोल रहे थे।

अंत में मैंने विद्यार्थियों से, एक assignment के रूप में, 'A letter to the children of India' शीर्षक वाला एक स्वयं अपना पत्र लिखने को कहा। मैंने उनसे उन कुछ वाक्यांशों का उपयोग करने को कहा जिनका उन्होंने अभी–अभी अभ्यास किया था, और यह कल्पना करने को कहा कि वह पत्र *टाइम्स ऑफ इंडिया* में प्रकाशित होगा। अगली बार कक्षा में मुझे बहुत से रोचक पत्र पढ़ने को मिले।

गतिविधि 5: कक्षा में आजमाएं – भारत के बच्चों के नाम एक पत्र

केस–स्टडी 2 में नेहरूजी के पत्र को पढ़ने से पहले, दौरान और पश्चात विद्यार्थी कई गतिविधियाँ करते हैं। इन गतिविधियों में सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना शामिल है। आप संसाधन 4 में शिक्षक की पाठ योजना पा सकते हैं। यह पाठ (या ऐसा ही कोई अध्याय) अपने विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए आप इस पाठ योजना का उपयोग कर सकते हैं।

विचार कीजिए

यहाँ इस गतिविधि को आजमाने के बाद आपके विचार करने के लिए कुछ प्रश्न दिए गए हैं। यदि संभव हो, तो इन प्रश्नों की चर्चा किसी साथी शिक्षक के साथ करें।

- क्या आप सोचते हैं कि इस इकाई की तकनीकों ने पाठ को समझने में आपके विद्यार्थियों की सहायता की?
- क्या आपके विद्यार्थियों ने सलाह देने की भाषा का प्रभावी ढंग से उपयोग किया?

आपको हर बार कोई अध्याय पढ़ाते समय सभी तकनीकों का उपयोग करने की जरूरत नहीं है। पर आपसे जितना हो सके और जितनी बार हो सके उपयोग करना अच्छी बात है। आप इन तकनीकों का उपयोग पाठ्यपुस्तक के किसी भी अध्याय या किसी भी अन्य पाठ (उदा. अखबार का कोई लेख) के साथ कर सकते हैं। किसी अन्य अध्याय या पाठ के साथ ऐसी ही योजना लिखें और उसे अपने साथी शिक्षक के साथ साझा करें।

5 सारांश

समझने के लिए पढ़ने में विद्यार्थियों की मदद करने के लिए, आप उन्हें पठन–पूर्व गतिविधियाँ दे सकते हैं। आप विद्यार्थियों को मौन होकर पढ़ने के लिए भी प्रोत्साहित कर सकते हैं और उनके पढ़ते समय उन्हें कुछ करने को दे सकते हैं (जैसे प्रश्नों के उत्तर खोजना)। आप उन्हें समझ की जाँच करने अध्याय से नई भाषा का अभ्यास करने या बोलने या लिखने जैसे भाषा संबंधी कौशल विकसित करने के लिए पठन–पश्च गतिविधियाँ दे सकते हैं। इन तकनीकों का उपयोग पाठ्यपुस्तक या और कहीं से भी लिए गए किसी भी पाठ के साथ किया जा सकता है।

यदि आप अपने स्वयं के पठन कौशलों को विकसित करने के बारे में अधिक जानना चाहते हैं तो संसाधन 5 देखें और यदि आप पढ़ना सिखाने के बारे में अधिक जानना चाहते हैं, तो अतिरिक्त संसाधन खंड देखें।

इस विषय पर अन्य माध्यमिक अंग्रेजी शिक्षक विकास इकाइयाँ ये हैं:

- *समग्र–कक्षा पठन गतिविधियाँ* आप इस इकाई में पठन के बारे में अधिक जान सकते हैं। इसमें अधिक तकनीकों और कार्यनीतियों पर चर्चा की गई है जिनका उपयोग विद्यार्थी अपने पठन कौशलों का विकास करने के लिए कर सकते हैं।
- *शब्दों से खेले* यह इकाई इस बात पर चर्चा करती है कि अध्यापक किसी पाठ के शब्दों को समझने के लिए विद्यार्थियों की कैसे सहायता कर सकते हैं, और संदर्भ के शब्दों को पढ़ाने के लिए पाठों के उपयोग पर चर्चा करती है।
- *पढने में मजा* इस इकाई में आप अत्यंत विस्तृत रूप से पढ़ने में विद्यार्थियों की मदद करने की तकनीकों के बारे में जान सकते हैं।

संसाधन

संसाधन 1: भारत के बच्चों के नाम एक पत्र **A Letter to the children of India**

Dear Children,

I like being with children and talking to them and, even more, playing with them. For the moment I forget that I am terribly old and it is very long ago since I was a child. But when I sit down to write, I cannot forget my age and the distance that separates you from me. Old people have a habit of delivering sermons and good advice to the young.

I remember that I disliked this very much long ago when I was a boy. So I suppose you do not like it very much either. Grown-ups also have a habit of appearing to be very wise, even though very few of them possess much wisdom. I have not yet quite made up my mind whether I am wise or not. Sometimes listening to others I feel that I must be wise and brilliant and important. Then, looking at myself, I begin to doubt this. In any event, people who are wise do not talk about their wisdom and do not behave as if they were very superior persons …

What then shall I write about? If you were with me, I would love to talk to you about this beautiful world of ours, about flowers, trees, birds, animals, stars, mountains, glaciers and all the other beautiful things that surround us in the world. We have all this beauty all around us and yet we, who are grown-ups, often forget about it and lose ourselves in our arguments or in our quarrels. We sit in our offices and imagine that we are doing very important work.

I hope you will be more sensible and open your eyes and ears to this beauty and life that surrounds you. Can you recognise the flowers by their names and the birds by their singing? How easy it is to make friends with them and with everything in nature, if you go to them affectionately and with friendship. You must have read many fairy tales and stories of long ago. But the world itself is the greatest fairy tale and story of adventure that was ever written. Only we must have eyes to see and ears to hear and a mind that opens out to the life and beauty of the world.

Grown-ups have a strange way of putting themselves in compartments and groups. They build barriers … of religion, caste, colour, party, nation, province, language, customs, and of rich and poor. Thus they live in prisons of their own making. Fortunately, children do not know much about these barriers, which separate. They play and work with each other and it is only when they grow up that they begin to learn about these barriers from their elders. I hope you will take a long time in growing up …

Some months ago, the children of Japan wrote to me and asked me to send them an elephant. I sent them a beautiful elephant on behalf of the children of India. … This noble animal became a symbol of India to them and a link between them and the children of India. I was very happy that this gift of ours gave so much joy to so many children of Japan, and made them think of our country … remember that everywhere there are children like you going to school and work and play, and sometimes quarrelling but always making friends again. You can read about these countries in your books, and when you grow up many of you will visit them. Go there as friends and you will find friends to greet you.

You know we had a very great man amongst us. He was called Mahatma Gandhi. But we used to call him affectionately Bapuji. He was wise, but he did not show off his wisdom. He was simple and childlike in many ways and he loved children … he taught us to face the world cheerfully and with laughter.

Our country is a very big country and there is a great deal to be done by all of us. If each one of us does his or her little bit, then all this mounts up and the country prospers and goes ahead fast.

I have tried to talk to you in this letter as if you were sitting near me, and I have written more than I intended.

(Nehru, 1949)

कुछ प्रश्न जो आप पत्र के बारे में पूछ सकते हैं:

Who is the writer of the letter? Who is he writing to?
How old is the writer of the letter?
What is the main purpose of the letter?
How does the writer describe grown-ups?
How are children different to grown-ups?
What advice does the writer give?

संसाधन 2: पाठ की योजना बनाना

अपने पाठों की योजना बनाना और उनकी तैयारी क्यों महत्वपूर्ण है

अच्छे शिक्षण की योजना बनानी होती है। यह आपके अध्यायों को स्पष्ट और सुसामयिक बनाने में मदद करता है, अर्थात विद्यार्थी सक्रिय और आकृष्ट बने रह सकते हैं। प्रभावी पाठ योजन में कुछ अंतर्निहित लचीलापन भी शामिल होता है ताकि अध्यापक पढ़ाते समय अपने विद्यार्थियों की शिक्षण–प्रक्रिया के बारे में कुछ पता चलने पर उसके प्रति अनुक्रिया कर सकें। अध्यायों की श्रृंखला के लिए योजना पर काम करने में विद्यार्थियों और उनके पूर्व–ज्ञान को जानना, पाठ्यक्रम में से आगे बढ़ने के क्या अर्थ है और विद्यार्थियों के पढ़ने में मदद करने के लिए सर्वोत्तम संसाधनों और गतिविधियों की खोज करना शामिल होता है।

नियोजन एक सतत प्रक्रिया है जो आपको अलग–अलग अध्यायों और साथ ही एक के बाद एक विकसित होते अध्यायों की श्रृंखला, दोनों की तैयारी करने में मदद करती है। पाठ योजन के चरण ये हैं:

- अपने विद्यार्थियों की प्रगति के लिए आवश्यक बातों के बारे में स्पष्ट रहना
- तय करना कि आप कौन से ऐसे तरीके से पढ़ाने जा रहे हैं जिसे विद्यार्थी समझेंगे और आपको जो पता लगेगा उसके प्रति अनुक्रिया करने के लचीलेपन को कैसे बनाए रखेंगे
- पीछे मुड़कर देखना कि अध्याय कितनी अच्छी तरह से चला और आपके विद्यार्थियों ने क्या सीखा ताकि भविष्य के लिए योजना बना सकें।

अध्यायों की श्रृंखला का नियोजन करना

किसी पाठ्यक्रम को पढ़ने के लिए नियोजन का पहला भाग यह निश्चित करना होता है कि पाठ्यक्रम के विषयों और प्रसंगों को खंडों या टुकड़ों में किस सर्वोत्तम ढंग से विभाजित किया जाय। आपको विद्यार्थियों के प्रगति करने तथा कौशलों और ज्ञान का क्रमिक रूप से विकास करने के लिए उपलब्ध समय और तरीकों पर विचार करना होगा। आपके अनुभव या साथी शिक्षक के साथ चर्चा से आपको पता चल सकता है कि किसी विषय के लिए चार अध्याय लगेंगे, लेकिन किसी अन्य विषय के लिए केवल दो। आपको इस बात से अवगत रहना चाहिए कि आप भविष्य में उस सीख पर अलग तरीकों से और अलग अलग समयों पर तब लौट सकते हैं, जब अन्य विषय पढ़ाए जाएंगे या विषय को विस्तारित किया जाएगा।

सभी पाठों की योजनाओं में आपको निम्न बातों के बारे में स्पष्ट रहना होगा:

विद्यार्थियों को आप क्या सिखाना चाहते हैं
आप उस अधिगम का परिचय कैसे देंगे

विद्यार्थियों को क्या और क्यों करना होगा।

आप शिक्षण को सक्रिय और रोचक बनाना चाहेंगे ताकि विद्यार्थी सहज और उत्सुक महसूस करें। इस बात पर विचार करें कि पाठों की श्रृंखला में विद्यार्थियों से क्या करने को कहा जाएगा ताकि आप न केवल विविधता और रुचि बल्कि लचीलापन भी बनाए रखें। योजना बनाएं कि जब आपके विद्यार्थी पाठों की श्रृंखला में से प्रगति करेंगे तब आप उनकी समझ की जाँच कैसे करेंगे। यदि कुछ भागों को अधिक समय लगता है या वे जल्दी समझ में आ जाते हैं तो समायोजन करने के लिए तैयार रहें।

अलग–अलग पाठों की तैयारी करना

पाठों की श्रृंखला को नियोजित कर लेने के बाद प्रत्येक पाठ को उस प्रगति के आधार पर अलग से नियोजित करना होगा जो विद्यार्थियों ने उस समय तक की है। आप जानते हैं या पाठों की श्रृंखला के अंत में यह आप जान सकेंगे कि विद्यार्थियों ने क्या सीख लिया होगा, लेकिन आपको किसी अप्रत्याशित चीज को फिर से दोहराने या अधिक शीघ्रता से आगे बढ़ने की जरूरत हो सकती है। इसलिए हर पाठ को अलग से नियोजित करना चाहिए ताकि आपके सभी विद्यार्थी प्रगति करें और सफल तथा अपने आपको अलग–थलग मेहसूस न करें।

पाठ की योजना के भीतर आपको सुनिश्चित करना चाहिए कि प्रत्येक गतिविधि के लिए पर्याप्त समय है और कि सभी संसाधन तैयार हैं, जैसे क्रियात्मक कार्य या सक्रिय समूहकार्य के लिए। बड़ी कक्षाओं के लिए सामग्रियों के नियोजन के हिस्से के रूप में आपको अलग अलग समूहों के लिए अलग अलग प्रश्नों और गतिविधियों की योजना बनानी पड़ सकती है।

नए विषय पढ़ाते समय आपको आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए अभ्यास करने और अन्य अध्यापकों के साथ बातचीत करने के लिए समय की जरूरत पड़ सकती है।

तीन भागों में अपने पाठों को तैयार करने के बारे में सोचें। इन भागों पर नीचे चर्चा की गई है।

1 परिचय

पाठ के शुरू में विद्यार्थियों को समझाएं कि वे क्या सीखेंगे और करेंगे, ताकि हर एक को पता रहे कि उनसे क्या उम्मीद की जाती है। विद्यार्थी पहले से ही जो जानते हैं उन्हें उसे साझा करना को कहें जिससे वे जो करने वाले हों उसमें उनकी दिलचस्पी पैदा हो सकें।

2 पाठ का मुख्य भाग

विद्यार्थी जो कुछ पहले से जानते हैं उसके आधार पर अध्यापन की रूपरेखा बनाएं। आप स्थानीय संसाधनों, नई जानकारी या सक्रिय पद्धतियों के उपयोग का निर्णय ले सकते हैं जिनमें समूहकार्य या समस्याओं का समाधान करना शामिल है। उपयोग करने के लिए संसाधनों और उस तरीके की पहचान करें जिससे आप अपनी कक्षा में उपलब्ध स्थान का उपयोग करें सके। विविध प्रकार की गतिविधियों, संसाधनों, और समय का उपयोग पाठ योजना का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यदि आप विभिन्न विधियों और गतिविधियों का उपयोग करते हैं, तो आप अधिक विद्यार्थियों तक पहुँच पाएँगे, क्योंकि वे अलग–अलग तरीकों से सीखतें हैं।

3 पाठ का अंतिम भाग – अधिगम की जॉच

हमेशा यह पता लगाने के लिए समय (पाठ के दौरान या उसकी समाप्ति पर) रखें कि कितनी प्रगति की गई है। जाँच करने का अर्थ हमेशा परीक्षा ही नहीं होता है। यह तत्कालिक होता है – जैसे प्रश्न द्वारा या विद्यार्थियों की प्रस्तुति द्वारा – लेकिन आपको लचीला होना होगा और विद्यार्थियों के फीडबैक के अनुसार परिवर्तन करने की योजना बनानी चाहिए।

पाठ को समाप्त करने का एक अच्छा तरीका हो सकता है शुरू के लक्ष्यों पर वापस लौटना और विद्यार्थियों को इस बात के लिए समय देना कि वे एक दूसरे को और आपको उस शिक्षण से हुई उनकी प्रगति के बारे में बता सकें। विद्यार्थियों की बात को सुनकर आप सुनिश्चित कर सकेंगे कि आपको पता रहे कि अगले पाठ के लिए क्या योजना बनानी है।

पाठों की समीक्षा

हर पाठ का पुनरावलोकन करें और इस बात दर्ज करें कि आपने क्या किया, आपके विद्यार्थियों ने क्या सीखा, किन संसाधनों का उपयोग किया गया और सब कुछ कितनी अच्छी तरह से संपन्न हुआ ताकि आप अगले पाठों के लिए अपनी योजनाओं में सुधार कर सकें। उदाहरण के लिए, आप निम्न का निर्णय कर सकते हैं:

- गतिविधियों में बदलाव करना
- खुले और बंद प्रश्न तैयार करना
- जिन विद्यार्थियों को अतिरिक्त सहायता चाहिए उनके साथ अनुवर्ती सत्र (follow-up session) आयोजित करना।

सोचें कि आप विद्यार्थियों के सीखने में मदद के लिए क्या योजना बना सकते थे या क्या अधिक बेहतर कर सकते थे।

जब आप हर पाठ के बारे में सोचेंगें तो आपकी पाठ योजनाएं जरुर बदल जाएंगी, क्योंकि आप हर होने वाली चीज का पूर्वानुमान नहीं कर सकते। अच्छे नियोजन का अर्थ है कि आप जानते हैं कि आप शिक्षण को किस तरह से करना चाहते हैं और इसलिए जब आपको अपने विद्यार्थियों के वास्तविक अधिगम के बारे में पता चलेगा तब आप लचीले ढंग से उसके प्रति अनुक्रिया करने को तैयार रहेंगे।

संसाधन 3: प्रगति एवं प्रदर्शन का आकलन करना

विद्यार्थियों के अधिगम का मूल्यांकन करने के दो उद्देश्य हैं:

- **योगात्मक मूल्यांकन** जिसमें आप पढ़ाने के बाद क्या सीखा,कितना सीखा,इसका मूल्यांकन करते है।यह मूल्यांकन अक्सर परीक्षा व टेस्ट के रुप में होता है,जहां विद्यार्थियों को प्राप्तांक के आधार पर वर्गीकृत करते हैं। इससे परिणामों की रिपोर्टिंग में मदद मिलती है।
- **निर्माणात्मक मूल्यांकन** (या अधिगम के लिए मूल्यांकन) काफी अलग है जो अधिक अनौपचारिक तथा नैदानिक स्वरूप का होता है। शिक्षक उन्हें शिक्षण प्रक्रिया के अंग के रूप में उपयोग करते हैं उदाहरण के लिए, जहाँ यह पता लगाने के लिए प्रश्न पूछने का इस्तेमाल किया जाता है कि क्या विद्यार्थियों ने किसी चीज़ को समझा है या नहीं। इस मूल्यांकन के परिणामों का फिर अगले शिक्षण अनुभव को बदलने के लिए उपयोग किया जाता है। निगरानी और फ़ीडबैक निर्माणात्मक मूल्यांकन का हिस्सा है।

निर्माणात्मक मूल्यांकन सीखने को बढ़ाता है, क्योंकि सीखने के लिए, अधिकांश विद्यार्थियों को:

- यह पता होना चाहिए कि उनसे क्या उम्मीद की जा रही है
- जानना चाहिए कि अपनी पढ़ाई में वे इस समय किस स्तर पर हैं
- समझना चाहिए कि वे किस प्रकार प्रगति कर सकते हैं (अर्थात् क्या पढ़ना चाहिए और कैसे पढ़ना चाहिए)
- जानना चाहिए कि कब उन्होंने लक्ष्य और अपेक्षित परिणाम हासिल कर लिए हैं।

शिक्षक के रूप में, अगर आप प्रत्येक पाठ में उपर्युक्त चार बिंदुओं पर ध्यान देंगे, तो आप अपने विद्यार्थियों से सर्वश्रेष्ठ परिणाम प्राप्त करेंगे। इस प्रकार पढ़ाने से पहले, पढ़ाते समय और पढ़ाने के बाद मूल्यांकन किया जा सकता है:

- **पहले:** पढ़ाने से पहले मूल्यांकन से आपको यह जानने में मदद मिलती है कि विद्यार्थी क्या जानते हैं और पढ़ाने से पहले क्या कर सकते हैं। यह बेसलाइन निर्धारित करता है और आपको अपनी शिक्षण योजना तैयार करने के लिए प्रारंभिक बिंदु देता है। विद्यार्थी क्या जानते हैं इस बारे में अपनी समझ को बढ़ाने से विद्यार्थियों को जिसमें पहले से ही महारत हासिल है उसे दुबारा पढ़ाने या संभवतः उन्हें जो जानना या समझना है (लेकिन नहीं जानते) उसे छोड़ने के मौक़े कम होंगे।
- **पढ़ाते समय:** कक्षा में पढ़ाते समय मूल्यांकन करने में यह देखना शामिल है कि क्या विद्यार्थी सीख रहे हैं और उनमें सुधार हो रहा है। इससे आपको अपनी शिक्षण पद्धति, संसाधनों और गतिविधियों का समायोजन करने में मदद मिलेगी। यह आपको यह समझने में मदद करेगा कि विद्यार्थी वांछित उद्देश्य की दिशा में किस प्रकार प्रगति कर रहा है और आपका शिक्षण कितना सफल है।
- **पढ़ाने के बाद:** शिक्षण के बाद किया जाने वाला मूल्यांकन पुष्टि करता है कि विद्यार्थियों ने क्या सीखा है और आपको दर्शाता है कि किसने सीखा है और किसे अभी मदद की ज़रूरत है। इससे आप अपने शिक्षण लक्ष्य का प्रभावी आकलन कर सकेंगे।

पहले: आपके विद्यार्थी क्या सीखेंगे इस बारे में स्पष्ट रहना

जब आप तय करते हैं कि विद्यार्थियों को पाठ या पाठों की श्रृंखला में क्या सीखना चाहिए तो आपको यह उन्हेंपहले से बता दीजिए। सावधानी से अंतर करें कि विद्यार्थियों को आप क्या करने के लिए कह रहे हैं और विद्यार्थियों से क्या सीखने की उम्मीद कर रहें है। ऐसा प्रश्न पूछिये जिससे कि आपको इस बात का आकलन करने का अवसर प्राप्त हो कि क्या उन्होंने वाक़ई समझा है या नहीं। उदाहरण के लिए:

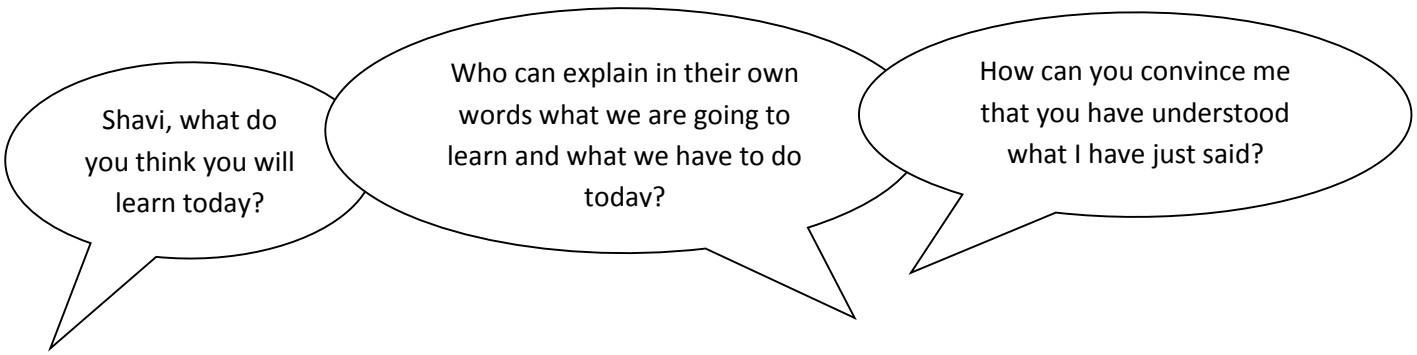

विद्यार्थियों को जवाब देने से पहले सोचने के लिए कुछ सेकंड दें, या शायद विद्यार्थियों को पहले जोड़े या छोटे समूहों में अपने जवाब पर चर्चा करने के कहें। जब वे आपको अपना उत्तर बताएँ, आप जान जाएँगे कि क्या वे समझते हैं कि उन्हें क्या सीखना है।

पहलेः जानना कि विद्यार्थी अपने अधिगम (सीखने) के किस स्तर पर हैं

आपके विद्यार्थियों में सुधार के लिए मदद करने के क्रम में आपको और उन्हें उनके ज्ञान और समझदारी की वर्तमान अवस्था को जानने की ज़रूरत पड़ेगी। पहले आप वांछित शिक्षण परिणामों या लक्ष्यों को विद्यार्थियों को बताएँ। उसके बाद आप यह कर सकते हैंः–

- विद्यार्थियों को माइंड मैप बनाने या उस विषय के बारे में वे पहले से क्या जानते हैं, उसे लिखने के लिए जोड़े में कार्य करने के लिए कहें, और उन्हें काम पूरा करने के लिए पर्याप्त समय दें, लेकिन इसके लिए बहुत ज्यादा समय नहीं देना चाहिए। उसके बाद आप उन माइड मैप या सूचियों पर चर्चा करें।
- महत्वपूर्ण शब्दावली को बोर्ड पर लिखें और प्रत्येक शब्द के बारे में वे क्या जानते हैं, यह बताने के लिए स्वेच्छा से उन्हें आगे आने के लिए कहें। फिर बाक़ी कक्षा से कहें कि यदि वे शब्द समझते हैं, तो अपना अंगूठा थम्ब्स्–अप की मुद्रा में ऊपर उठाएँ, यदि वे बहुत कम जानते हैं या बिल्कुल नहीं जानते हैं, तो थम्ब्स–डाउन की मुद्रा में नीचे करें और यदि वे कुछ जानते हैं, तो अंगूठे को क्षैतिज यानी बीच में रखें।

अगर आप यह जानते है कि आपको कहाँ से शुरुआत करनी है, तो आप विद्यार्थियों के लिए प्रासंगिक और रचनात्मक रूप से पाठ योजना बना सकते हैं। यह भी महत्वपूर्ण है कि आपके विद्यार्थी यह मूल्यांकन करने में सक्षम हों कि वे कितनी अच्छी तरह सीख रहे हैं, ताकि आप और वे, दोनों जान सकें कि उन्हें आगे क्या सीखने की ज़रूरत है। आपके विद्यार्थियों को स्वयं अपने शिक्षण का भार उठाने का अवसर प्रदान करने से उन्हें आजीवन शिक्षार्थी बनाने में मदद मिलेगी।

पढ़ाते समयः सीखने में विद्यार्थियों की प्रगति सुनिश्चित करना

जब आप विद्यार्थियों से उनकी प्रगति के बारे में बात करते हैं, तो सुनिश्चित करें कि उन्हें आपका फीडबैक उपयोगी और रचनात्मक, दोनों लगे। इस काम को इस तरह से कर सकतें हैं–

- विद्यार्थियों को उनकी ताक़त और यह जानने में मदद करना कि वे कैसे और सुधार कर सकते हैं
- इस बारे में स्पष्ट रहना कि आगे और किस चीज़ के विकास की ज़रूरत है
- इस बारे में सकारात्मक रहना कि वे किस प्रकार अपनी शिक्षा का विकास कर सकते हैं, जाँचना कि वे आपकी सलाह को समझ गए हैं और उसका उपयोग कर सकतें हैं।

आपको सीखने के बेहतर अवसर मुहैया कराने की ज़रूरत पड़ेगी। इसका अर्थ यह हुआ कि पढ़ाई के मामले में विद्यार्थियों के वर्तमान स्तर और जहाँ आप उन्हें देखना चाहते हैं, इसके बीच के अंतराल को पाटने के लिए हो सकता है कि आपको अपनी पाठ योजना को संशोधित करना पड़े। ऐसा करने के लिए आपको यह करना होगाः–

- कुछ ऐसे कार्यों पर वापस नज़र दौड़ाना होगा, जिनके बारे में आपने सोचा था कि वे पहले से जानते हैं।
- आवश्यकता के अनुसार विद्यार्थियों के समूह बनाना, उन्हें अलग–अलग कार्य देना।
- विद्यार्थियों को स्वयं यह निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करना कि उन्हें किन संसाधनों को पढ़ने की ज़रूरत है ताकि वे 'स्वयं अपना अंतराल पाट सकें'।
- ऐसे काम देना जिससे शुरुआत में आसानी हो और बाद में कठिन होता जाए।इस प्रकार सभी विद्यार्थी काम में शामिल होंगे।जो अधिक समर्थ है वे आगे तक काम करते रहेंगे और सीखते रहेंगे।

पाठों की रफ्तार को धीमा करके, अक्सर आप दरअसल अधिगम को तेज़ करते हैं, क्योंकि आप विद्यार्थियों को उस पर सोचने और समझने का समय और आत्मविश्वास देते हैं, जिसमें उन्हें सुधार लाने की ज़रूरत होती है। विद्यार्थियों को आपस में अपने काम के बारे में बात करने का मौक़ा देकर और इस बात पर चिंतन करके कि अंतराल कहाँ पर है और वे इसे किस प्रकार से ख़त्म कर सकते हैं, आप उन्हें स्वयं का आकलन करने के तरीक़े मुहैया करा रहे हैं।

पढ़ाने के बादः प्रमाण एकत्रित करना और उसकी व्याख्या करना, और आगे की योजना बनाना

जब पढ़ाना–सीखना चल रहा हो और कक्षा–कार्य और गृह–कार्य निर्धारित करने के बाद, ज़रूरी है किः

- इस बात का पता लगाएँ कि आपके विद्यार्थी कितनी अच्छी तरह कार्य कर रहे हैं
- अगले पाठ में आप क्या चाहतें है।,उन्हें बताएँ।
- विद्यार्थियों को फीडबैक दें।

मूल्यांकन की चार प्रमुख स्थितियों की नीचे चर्चा की गई है।

सूचना या प्रमाण एकत्रित करना

प्रत्येक छात्र, स्वयं अपनी गति और शैली में, स्कूल के अंदर और बाहर अलग प्रकार से सीखता है। इसलिए, विद्यार्थियों का मूल्यांकन करते समय आपको दो चीज़ें करनी होंगीः

> विविध सूत्रों से जानकारी एकत्रित करें – स्वयं अपने अनुभव से, छात्र, अन्य छात्रों, अन्य शिक्षकों, अभिभावकों और समुदाय के सदस्यों से।
> विद्यार्थियों का व्यक्तिगत रूप से, जोड़ों में और समूहों में मूल्यांकन करें, तथा स्व–मूल्यांकन को बढ़ावा दें। अलग विधियों का प्रयोग महत्वपूर्ण है, क्योंकि कोई एक पद्धति आपके वह सभी जानकारी उपलब्ध नहीं कराती, जिसकी आपको ज़रूरत है। विद्यार्थियों के सीखने और प्रगति के बारे में जानकारी इकट्ठा करने के विभिन्न तरीक़ों में शामिल हैं, देखना, सुनना, विषयों और प्रकरणों पर चर्चा, तथा लिखित वर्ग और गृह–कार्य की समीक्षा करना।

रिकार्डिंग

भारत भर के सभी स्कूलों में रिकॉर्डिंग का सबसे आम स्वरूप रिपोर्ट कार्ड के उपयोग के माध्यम से होता है, लेकिन इसमें आपको एक विद्यार्थी के सीखने या व्यवहार के सभी पहलुओं को रिकॉर्ड करने की जगह नहीं मिलती है। अतः कुछ सरल तरीक़े हैं जिन पर भी आप विचार कर सकते हैं, जैसे किः

> पढ़ाते–सीखते समय जो आप देखते हैं उसे डायरी/नोटबुक/रजिस्टर में नोट करना
> विद्यार्थियों के कार्य के नमूने (लिखित, कला, शिल्प, परियोजनाएँ, कविताएँ आदि) पोर्टफ़ोलियो में रखना
> प्रत्येक विद्यार्थी की प्रोफ़ाइल तैयार करना
> विद्यार्थियों की किन्हीं असामान्य घटनाओं, परिवर्तनों, समस्याओं, शक्तियों और शिक्षण प्रमाणों को नोट करना।

प्रमाण की व्याख्या

जैसे ही सूचना और प्रमाण एकत्रित और अभिलिखित हो जाए, उसकी व्याख्या करना ज़रूरी है, ताकि यह समझ सकें कि प्रत्येक विद्यार्थी किस प्रकार सीख रहा है और प्रगति कर रहा है। ,इस पर सावधानी से विचार करने और विश्लेषण की आवश्यकता है। फिर आपको शिक्षण में सुधार करने, संभवतः विद्यार्थियों को फ़ीडबैक देकर या नए संसाधनों की खोज करके, समूहों को पुनर्व्यवस्थित करके, या शिक्षण बिंदु को दोहरा कर अपने निष्कर्षों पर कार्य करने की आवश्यकता है।

सुधार के लिए योजना बनाना

मूल्यांकन, विशिष्ट और विभेदक शिक्षण गतिविधियों की स्थापना द्वारा प्रत्येक विद्यार्थी को सार्थक रूप से सीखने के अवसर प्रदान करने, अधिक मदद के ज़रूरतमंद विद्यार्थियों पर ध्यान देने और अधिक उन्नत विद्यार्थियों को चुनौती देते हुए सार्थक शिक्षण अवसर उपलब्ध कराने में आपकी मदद कर सकते हैं।

संसाधन 4: पाठ योजना – भारत के बच्चों के नाम एक पत्र

आप इस पाठ योजना की संरचना का उपयोग किसी भी पाठ या गद्यांश के साथ कर सकते हैं। इसके विभिन्न अंगों को एक ही कक्षा में, या कई कक्षाओं में संचालित किया जा सकता है।

पठन–पूर्व

1 बोर्ड पर शीर्षक लिखें, और समझाएं कि पत्र किस बारे में है (एक बुजुर्ग व्यक्ति भारत के बच्चों को सलाह दे रहे हैं)।

2 विद्यार्थियों से कुछ सलाह सोचने के लिए कहें जो वे भारत के बच्चों को देंगे। एक या दो सुझाव ब्लैकबोर्ड पर अंग्रेजी में लिखें।

3 विद्यार्थियों की जोड़ियाँ बनाएँ। प्रत्येक जोड़ी से पाँच सलाहों पर चर्चा करने और उन्हें अंग्रेजी में लिखने को कहें। उनसे गलतियाँ हो जाने के बारे में चिंता न करने को कहें।

4 तीन मिनट बाद, विद्यार्थियों से लिखना बंद करने को कहें, और तीन या चार समूहों को उनका लिखा पढ़ने को कहें।

सुझावः याद रखें कि यह चरण विचार प्राप्त करने और पाठ के लिए तैयारी करने के बारे में है। गलतियों पर ध्यान न दें। बल्कि विषय–वस्तु पर ध्यान दें; यानी, वह सलाह जो आपके विद्यार्थी सुझा रहे हैं।

पढ़ते समय

1 विद्यार्थियों से पत्र को मौन होकर पढ़ने को कहें। उन्हें पत्र को पढ़ते समय उस सलाह को रेखांकित करने को कहें जो नेहरूजी देते हैं। विद्यार्थियों को पत्र पढ़ने और सलाह की खोज करने के लिए एक समय सीमा दें।

2 जब समय समाप्त हो जाय, तब विद्यार्थियों से उन्हें मिली सलाह की तुलना किसी सहपाठी (जोड़ी के रूप में), या सहपाठियों (समूह के रूप में) के साथ करने को कहें। उनसे नेहरूजी की सलाह और उनकी अपनी सलाह के बीच समानताओं और भिन्नताओं पर चर्चा करने को कहें।

3 जब विद्यार्थी पत्र पर चर्चा करें, तब कमरे में घूमें और नोट करें कि विद्यार्थियों ने उसे कितनी अच्छी तरह से समझा है। यदि विद्यार्थियों को कोई समस्याएं हो रही हों, तो उनकी सहायता करें।

4 कुछ मिनट बाद विद्यार्थियों से बात करना बंद करने को कहें और उस सलाह पर चर्चा करें जो नेहरूजी ने दी हैं।

सुझावः आपके लिए यह देखने का अवसर है कि आपके विद्यार्थियों ने पत्र को कितनी अच्छी तरह से समझा है। कोई बात नहीं यदि उन्होंने पाठ के हर शब्द को नहीं समझा है, लेकिन आपको यह देखना है कि उन्होंने सब महत्वपूर्ण बातें समझ ली हैं। क्या आपके अधिकांश विद्यार्थी उस सलाह को खोज पाए हैं जो नेहरूजी देते हैं? यदि नहीं, तो वह क्या चीज़ है जो उन्हें समझने से रोक रही है? आप उनकी सहायता कैसे कर सकते हैं? कुछ विद्यार्थियों ने अन्यों से अधिक समझा है। शायद वे समझा सकते हैं।

पठन–पश्च

1 सलाह देने के लिए कुछ वाक्यांश बोर्ड पर लिखें:

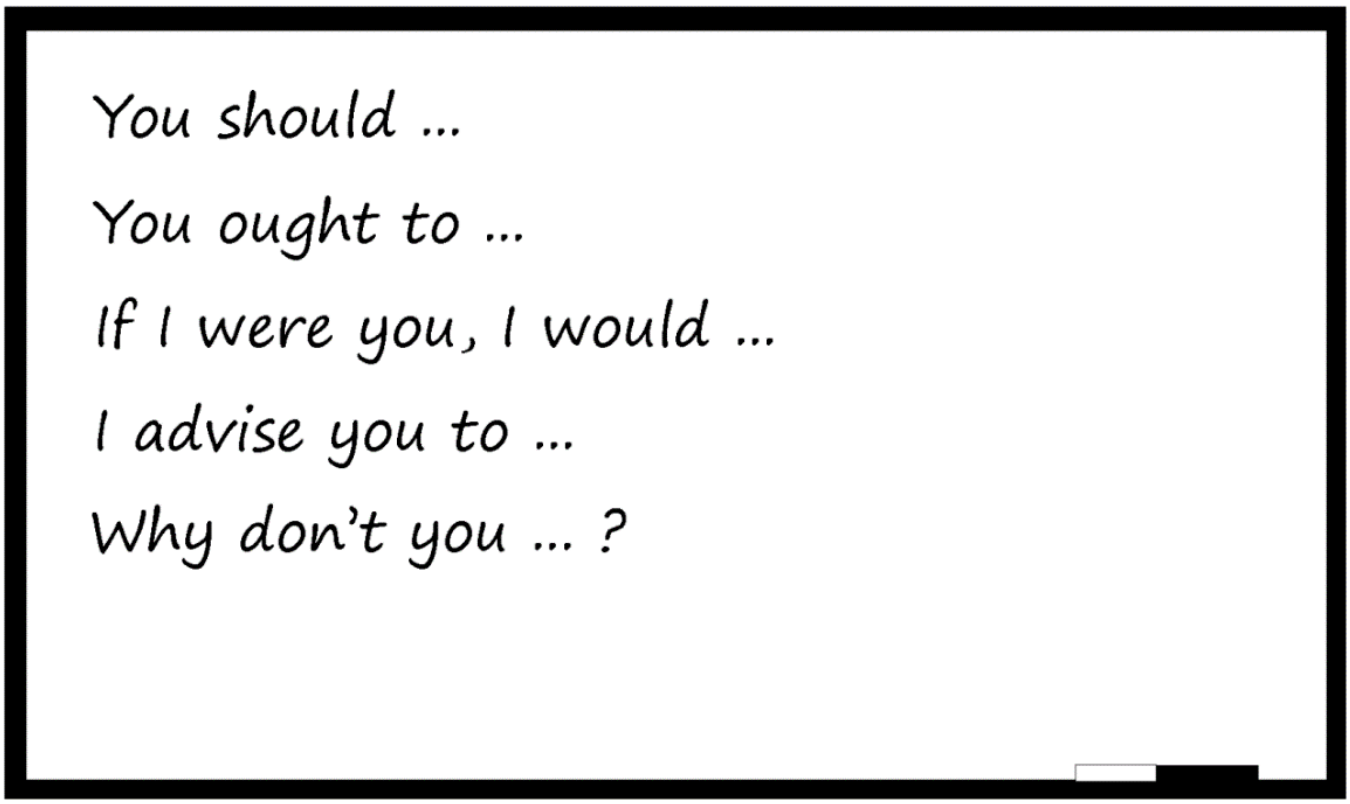

2 अपने विद्यार्थियों से कल्पना करने को कहें कि वे बूढ़े दादा या दादी हैं। उनसे ऐसी कुछ सलाह सोचने को कहें जो वे अपने पोते–पोतियों को दे सकते हैं। आप एक उदाहरण दे सकते हैं: 'आपको कठिन परिश्रम करना चाहिए।'

3 बोर्ड पर सुझाव लिखें, उदाहरण के लिए:

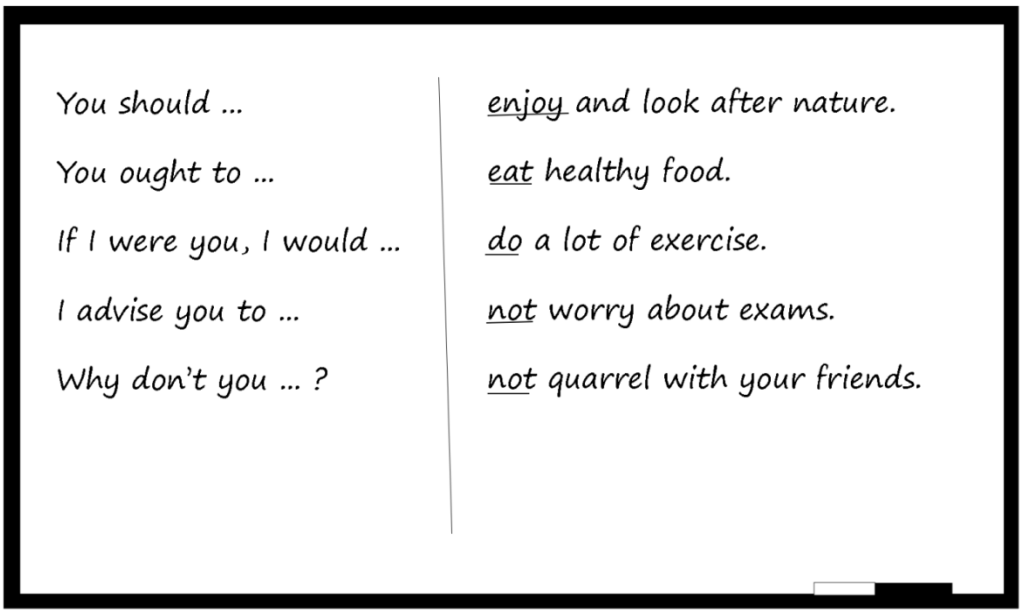

4 स्पष्ट करें कि विद्यार्थी किसी भी शुरूआत का उपयोग किसी भी अंत के साथ कर सकते हैं। Infinitive का उपयोग स्पष्ट करें। वाक्यों को ऊँची आवाज में पढ़ें और विद्यार्थियों से उच्चारण को दोहराने के लिए कहें।

5 विद्यार्थियों को जोड़ियों में संगठित करें, और भूमिकाएं दें: एक विद्यार्थी दादा या दादी है; दूसरा पोता या पोती है। दादा या दादी की भूमिका निभाने वाले विद्यार्थी को दूसरे विद्यार्थी को सलाह देनी चाहिए।

6 कुछ मिनटों के बाद, विद्यार्थियों को भूमिकाओं की अदला–बदली करने को कहें।

7 विद्यार्थियों से स्वयं अपना 'भारत के बच्चों के नाम एक पत्र' शीर्षक वाला पत्र लिखने को कहें।

सुझाव: किसी पाठ की थीम के बारे में बोलने और लिखने की गतिविधियाँ आपके विद्यार्थियों को उसमें प्रयुक्त भाषा का अभ्यास करने का अच्छा अवसर प्रदान करती हैं। यहाँ यदि आप चाहते हैं तो भाषा के सटीक उपयोग पर ध्यान दे सकते हैं। इस प्रकार की गतिविधियाँ विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तक के अध्यायों के प्रति अनुक्रिया करने, और उन्हें अपने जीवन के साथ संबंधित करने का अवसर भी देती हैं।

संसाधन 5: स्वयं अपनी अंग्रेज़ी का विकास करें

- आपके अंग्रेजी पठन कौशल का विकसित करने के लिए कुछ लेख दिये जा रहे हैं जिनका आप उपयोग कर सकते है। Here are some tips and links for developing your own reading skills:

- आपके अंग्रेजी पठन कौशल को विकसित करने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि आप अधिक से अधिक अंग्रेजी पढ़ें, अंग्रेजी समाचार पत्र एवं पत्रिकाएँ पढ़ें, अंग्रेजी में लिखे पाठ अपने सहयोगियों और मित्रों के साथ साझा करें। इसके अलावा यदि संभव हो ता लाइब्रेरी का उपयोग भी कर सकते हैं। The best way to develop your skills in reading English is to read as much as you can – English newspapers and magazines, etc. Exchange English texts with colleagues and friends. Use a library, if this is possible.

- नियमित रूप से पढ़ने के लिए प्रत्येक सप्ताह कुछ समय निकालें और एक ऐसा स्थान चुने जहाँ आपको कोई व्यवधान उत्पन्न न हो। Read regularly. Find a time to read each week, and if possible, find a quiet comfortable place where you will not be disturbed.

- इस इकाई में दी गई तकनीकों का उपयोग करें, जैसे क्षेत्र, टाइटल्स, सबटाइटल्स, जिनकी सहायता से टैक्स्ट में किया दिया गया है, उसकी जानकारी हो सके। जिनका अधिक हो सके मौन वाचन करें चाहे वह छोटा सा टेक्स्ट ही क्यों न हो। Use the

techniques that you have read about in this unit. Use pictures, titles, sub-titles to get an idea of what the text is about. Read silently for as long as you can. It doesn't matter if you read short extracts.

- हर शब्द का अर्थ निकालने का प्रयास न करें बल्कि टैक्स्ट में क्या संदेश दिया गया है, उसे समझने का प्रयास करें। हर शब्द के अर्थ को जानने के लिए डिक्शनरी का प्रयोग न करें, बल्कि उसके अर्थ का अनुमान लगाने की कोशिश करें। Don't try to understand every word. Try to understand the overall message or idea. Don't look up every word in a dictionary – try to guess meanings of words if you can, and just look up key words. Remember that you can read texts as many times as you like.

- वह पढ़े जिसमें आप आनंद ले सकें। कहानियों को पढ़े, जिन्हें आप पंसंद करते हैं या क्रिकेट से जुड़ी खबरें या समाचार पढ़ें। Finally, read the things you enjoy. Read stories if you enjoy them, or read cricket news if that's how you like to spend your time.

- नीचे दिये गये संसाधन आपके लिए महत्वपूर्ण हो सकते हैं। You may find the following resources useful:

  Stories and poems for learners of English (with activities):
  http://learnenglish.britishcouncil.org/en/stories-poems
  Articles about many different topics for learners of English (with audio and activities):
  http://learnenglish.britishcouncil.org/en/magazine
  BBC news for Asia: http://www.bbc.co.uk/news/world/asia/
  Times of India online: http://timesofindia.indiatimes.com/

अतिरिक्त संसाधन

'How useful are comprehension questions?' by Mario Rinvolucri:
http://www.teachingenglish.org.uk/article/how-useful-are-comprehension-questions
A series of articles by Dave Willis about reading: http://www.teachingenglish.org.uk/articles/reading-information-motivating-learners-read-efficiently
'Theories of reading' by Shahin Vaezi: part 1, http://www.teachingenglish.org.uk/articles/theories-reading; part 2, http://www.teachingenglish.org.uk/articles/theories-reading-2
'What is reading?' by Adrian Tennant: http://www.onestopenglish.com/skills/reading/reading-matters/reading-matters-what-is-reading/154842.article
'Success in reading': http://orelt.col.org/module/3-success-reading

संदसंदर्भ / संदर्भग्रंथ सूची

Gupta, S.P. (ed.) (2012) *English (A Textbook for Class X)*, revd edn (revised by K.D. Upadhyay). Noida: Banwari Lal Kaka & Sons (Publishers).

National Focus Group on Teaching of English © National Council of Educational Research and Training, 2006.

Nehru, J. (1949) 'Letter to the children of India', 3 December. Available from: http://articles.timesofindia.indiatimes.com/2002-11-14/edit-page/27299288_1_grown-ups-eyes-and-ears-beautiful-world (accessed 29 July 2014).

अभिस्वीकृतियाँ

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन–शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है (http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/)। नीचे दी गई सामग्री मालिकाना हक की है तथा इस परियोजना के लिए लाइसेंस के अंतर्गत ही उपयोग की गई है, तथा इसका Creative Commons लाइसेंस से कोई वास्ता नहीं है। इसका अर्थ यह है कि इस सामग्री का उपयोग अननुकूलित रूप से केवल TESS-India परियोजना के भीतर किया जा सकता है और किसी भी बाद के OER संस्करणों में नहीं। इसमें TESS-India, OU और UKAID लोगो का उपयोग भी शामिल है।

इस यूनिट में सामग्री को पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति के लिए निम्न स्रोतों का कृतज्ञतापूर्ण आभारः

गतिविधि 1: पाठ्यपुस्तक *अंग्रेजी में बेन जॉनसन की 'द परफेक्ट लाइफ':* [Activity 1: 'The Perfect Life' by Ben Jonson, in the textbook *English:*] *कक्षा 10,* NCERT के लिए एक पाठ्यपुस्तक। [*A Textbook for Class X*, NCERT]

'यह इकाई किस बारे में है' / वृत्त अध्ययन 1: UPS कल्लि पश्चिम के अध्यापक। ['What this unit is about'/Case Study 1: teacher from UPS Kalli Paschim.] अनुमति प्रदान की गई। [Permission granted.] फोटोः [Photo:] किम ऐशमोर। [Kim Ashmore.]

संसाधन 1: नेहरू, जे. (1949) 'भारत के बच्चों के नाम एक पत्र', 3 दिसंबर। [Nehru, J. (1949) 'A letter to the children of India', 3 December.]

कॉपीराइट के स्वामियों से संपर्क करने का हर प्रयास किया गया है। यदि किसी को अनजाने में अनदेखा कर दिया गया है, तो पहला अवसर मिलते ही प्रकाशकों को आवश्यक व्यवस्थाएं करने में हर्ष होगा।

वीडियो (वीडियो स्टिल्स सहित): भारत भर के उन अध्यापक शिक्षकों, मुख्याध्यापकों, अध्यापकों और विद्यार्थियों के प्रति आभार प्रकट किया जाता है जिन्होंने उत्पादनों में दि ओपन यूनिवर्सिटी के साथ काम किया है।